शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

वर्ष-२ अंक-१०

माह : अप्रैल २०२०

मिशन शिक्षण संवाद

Online Classes

लॉकडाउन में ऑनलाइन पढ़ाई

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-२
अंक-१०

माह- अप्रैल २०२०

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. सर्वेष्ट मिश्र
सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक
प्रांजल सक्सेना
आनन्द मिश्र

सह सम्पादक
डॉ० अनीता मुद्गल
आशीष शुक्ल

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन
आनन्द मिश्र, अफ़ज़ाल अहमद

विशेष सहयोगी
शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

शिक्षा भविष्य के लिए बेहतर नागरिक तैयार करती है। विशेषकर प्राथमिक शिक्षा की व्यक्तित्व निर्माण में अहम भूमिका होती है। वर्तमान में देश बहुत बड़ी चुनौतियों से जूझ रहा है। आज कोरोना संक्रमण फैलने का कारण हमारी लापरवाही के साथ जागरूकता का अभाव भी है। इसलिए आवश्यक है कि कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए जागरूक करने के साथ बच्चों को हाथ धोने का महत्व बहुत ही गम्भीरता से सिखाया जाए और भविष्य में आने वाली सम्भावनाओं के प्रति मानसिक रूप से तैयार किया जाए। कोरोना संक्रमण के कारण यह सत्र बिना वार्षिक परीक्षा के बीत गया। नये सत्र में विद्यालय खुलने हेतु एक लम्बा अंतराल है। इसलिए अगले सत्र हेतु शिक्षकों को बच्चों को पुनः पढ़ाई की ओर मोड़ने के लिए खासी मेहनत करनी पड़ेगी किन्तु मुझे विश्वास है कि शिक्षक इस विषम परिस्थिति को अपने शिक्षण कौशल के बल पर साध लेंगे।

मिशन शिक्षण संवाद ने प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाई है। मुझे विश्वास है कि वर्तमान अतिसंवेदनशील समय में यह संस्था अग्रणी भूमिका का निर्वाह करेगी। मैंने अनुभव किया है कि इस मंच से जुड़े शिक्षकों में उत्साह और कुछ कर गुजर जाने की ललक है। समय के साथ मिशन शिक्षण संवाद में कई नये आयाम जुड़े हैं। पाठ्यक्रम की कविताओं को फिल्मी गीतों की धुन पर ढालना हो, शिक्षण को सरल बनाने के लिए गतिविधियों और नवाचारों की खोज हो या नए–नए टीएलएम का निर्माण, यह मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े शिक्षकों के समर्पित भाव का परिणाम है।

इस पत्रिका का प्रतिमाह प्रकाशन सराहनीय पहल है। इससे नवीन विधाओं के एकत्रीकरण के साथ–साथ रोचक और शिक्षाप्रद लेख भी पाठकों को उपलब्ध हो रहे हैं। मिशन शिक्षण संवाद के अप्रैल अंक हेतु इस आशा के साथ अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कर रही हूँ कि इसकी सार्थकता अवश्य परिलक्षित होगी।

रूबी सिंह
सचिव,
बेसिक शिक्षा परिषद

सम्पादकीय

जब से मानव सृष्टि हुई तब से लेकर आज तक मानव और मानवता को नुकसान पहुँचाने अथवा नष्ट करने के संकल्प अनेकों बार प्राकृतिक, दैवीय एवं मानव द्वारा सामने आते रहे हैं। लेकिन मनुष्य ने हमेशा अपने प्रेम, विश्वास और धैर्य के साथ सामना करते हुए सत्य और श्रम के मजबूत अस्त्रों से अपने आपको बचाने में अनादि काल से सफलता प्राप्त की है।

वर्तमान में भी वही सब प्रयास आसुरी माया के रूप में हो रहे हैं। जिसका पता लगाना भी मुश्किल हो रहा है कहाँ कौन कालनेमि काल की गति को रोकने के लिए महात्मा के वेश में हम सभी के साथ में एवं बीच में छिपा है।

इन सभी से बचने की कोई स्थाई वैक्सीन नहीं है, कोई एक दवाई नहीं है क्योंकि यह रूप रंग वेश बदलने में सक्षम है। हर बार नये रूप में महामारी के रूप में एक आंधी एवं आत्म विश्वास के साथ निकलते हैं कि अब वह पृथ्वी से मानव और मानवता को नष्ट करके ही मानेंगे।

इसी के बीच जिसे लगा कि हम भी किसी से कम नहीं है और ऐसी आसुरी आंधी का सामने करने बाहर निकलकर आ गया तो वह इस आंधी की चपेट में आकर हमेशा के लिए नष्ट हो गया।

वहीं जो अपनी प्रति, परमात्मा और पिता के बताये, सिखाए और दिखाए रास्ते को अपनाता है वह न सिर्फ स्वयं सुरक्षित रहता है बल्कि मानव और मानवता को भी सुरक्षित रखने में सक्षम होता है क्योंकि कोई भी आसुरी शक्ति की आंधी सदैव के लिए नहीं होती है। इससे बचने के लिए आपको बस उतने दिन धैर्य के साथ अन्तर्मुखी होकर अपने आप के आत्म चिंतन में अन्दर ही रहना है। जिसे आधुनिक शब्दों में क्वारंटीन एवं आइसोलेशन भी कहते हैं। जिसे सदियों से हमारे पूर्वज किसी न किसी उपासना एवं साधना पद्धति में अपनाते आ रहे हैं।

इसीलिए वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए आपके आत्म चिंतन एवं अन्दर रहने के लिए मिशन शिक्षण संवाद आपको आत्मचिंतन की साधना एवं भविष्य में मानव और मानवता के कल्याण को विविधता के साथ विभिन्न विचारों को शब्दों में लिखने एवं पढ़ने का अवसर प्रदान करने का प्रयास करता है। इन्हीं अवसरों के प्रयास में आपके सामने हैं मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका 'शिक्षण संवाद'। इसे पढ़ते रहें और लिखते रहें, क्या अच्छा लगा?क्या सुधार करना हैं?मानवता के भविष्य निर्माण के लिए आपके विचार क्या हैं?

आइए हम सब वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अन्तर्मुखी रहें,

अन्दर रहें, सुरक्षित रहें क्योंकि हमें विश्वास है कि आंधी के बाद शान्ति जरूर आएगी।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र की कलम से	1–2
मिशन गीत	3
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	4–5
अनमोल बाल रत्न	6
निन्दक नियरे राखिए	7
वर्तमान शिक्षा की समस्याएँ	8–9
विचारशक्ति	10–12
विचारशक्ति	13
विचारशक्ति	14–15
बात महिला शिक्षकों की	16
टी.एल.एम.संसार	17–19
नवाचार	20–21
भाषा की जान–विराम चिन्ह	22
English Medium Diary	23–24
गतिविधि	25
प्रेरक प्रसंग	26–27
Teaching Techniques	28
कविता – गुरु महिमा	29
बाल साहित्य	30
बाल कहानी	31–33
बाल पहेलिया	34
स्टूडेंट ऑफ द इयर में सम्मानित हुए बच्चे	35
सदविचार	36–37
सदविचार	38–39
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	40
योग–विशेष	41–42
मिशन गीत	43

लॉकडाउन में शिक्षकों द्वारा अपने विद्यालय के बच्चों को ऑनलाइन सिखाने के शानदार प्रयास

—डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र,
राष्ट्रपति पदक प्राप्त शिक्षक/संपादक

वर्तमान में कोरोना संकट के दौरान लॉकडाउन में प्रदेश के हजारों परिषदीय शिक्षकों द्वारा किए जा रहे ऑनलाइन शिक्षण के प्रयासों की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। जी हाँ, वर्तमान में जब पिछले लगभग 1 महीने से अधिक समय से प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में कोरोना संकट के दौरान पूरी तरह से तालाबंदी है और शिक्षक तथा विद्यार्थी विद्यालयों में नहीं पहुँच पा रहे हैं। ऐसे में, प्रदेश के हजारों की संख्या में ऊर्जावान समर्पित व नवाचारी शिक्षकों ने स्वयं के प्रयासों से गरीब परिवारों के बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा की मुहिम चला रखी है। प्रदेश के विभिन्न जनपदों ने काफी बड़ी संख्या में ऐसे शिक्षक अपने स्वयं के मोबाइल डाटा व इलेक्ट्रॉनिक संसाधनो जैसे मोबाइल, कम्प्यूटर, आदि का प्रयोग कर रहे हैं। शिक्षकों के इन प्रयासों से जहाँ एक तरफ बच्चों के ज्ञान में सकारात्मक वृद्धि हो रही है वहीं समाज मे एक अच्छा संदेश भी जा रहा है। ऐसे शिक्षक बच्चों को सिखाने के लिए उनकी पाठ्य पुस्तकों की सामग्री के अनुसार शिक्षण कार्य कर रहे हैं। इतना ही नही आपदा के इस दौर में वह बच्चों के अभिभावकों को भी जागरूक कर रहे हैं। ज्यादातर शिक्षकों ने अपने इस अभियान के लिए इंटरनेट के जरिए व्हाट्सएप समूहों का सहारा लिया है। वह विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों के व्हाट्सएप नंबर लेकर एक ग्रुप का निर्माण किए हैं। जिसमें प्रतिदिन बच्चों की कक्षा के अनुसार सामग्री निर्माण व प्रेषण कर रहे हैं। समूहों में बच्चे उनके सवालों के जवाब देते हैं और शिक्षक पुनः उनका मूल्यांकन कर उनकी गलतियों को सुधार करते हुए बच्चों का मनोबल बढ़ा रहे हैं।

दूसरे महत्वपूर्ण साधन शिक्षक यूट्यूब चैनलों के रूप में प्रयोग कर रहे हैं।

जहाँ वह खुद के पढ़ाते हुए वीडियो शूट कर यूट्यूब पर अपलोड कर रहे हैं और उसके लिंक सीधे व्हाट्सएप समूह या बच्चों के व्यक्तिगत नंबर पर भेजकर उन्हें शिक्षा देने का प्रयास कर रहे हैं। कुछ शिक्षक तो तकनीक के नए साधन जैसे रेडियो टेलीविजन व FM पर कार्यक्रम, समाचार पत्रों व जूम जैसे वीडियो कांफ्रेंसिंग ऐप का प्रयोग करते हुए एक साथ कई बच्चों को ऑनलाइन ट्यूटोरियल देने का प्रयास कर रहे हैं। कुछ शिक्षक बच्चों की पाठ्य सामग्री को पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के रूप में तथा कुछ हस्तनिर्मित शिल्प सामग्री तैयार कर समूह में शेयर कर रहे हैं। इसके अलावा बहुत सारे शिक्षक बच्चों के इंटरनेटविहीन मोबाइल फोन पर कॉल करके उन बच्चों को सिखाने का प्रयास कर रहे हैं। इस तरह प्रदेश में लगभग एक लाख से अधिक शिक्षकों द्वारा वर्तमान में इस तरह की तकनीक का प्रयोग कर बच्चों को शिक्षा देने का जो प्रयास किया जा रहा है। शिक्षकों के इन प्रयासों को वर्तमान सरकार और बेसिक शिक्षा विभाग भी सराहते हुए शिक्षकों के इन प्रयासों को अपनी वेबसाइट, यूट्यूब चैनल व सोशल मीडिया के प्लेटफार्म जैसे ट्विटर, फेसबुक व अन्य माध्यमों से प्रसारित कर शिक्षकों का मनोबल भी बढ़ा रहा है। इससे शिक्षकों में और बेहतर तरीके से कार्य करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इस तरह वर्तमान में जब विद्यालयों के बंद होने से लाखों की संख्या में गरीबों की बच्चों की पढ़ाई पटरी से उतरने लगी थी ऐसे में प्रदेश के होनहार शिक्षकों ने तकनीक का प्रयोग करके शिक्षा की बेहतरी के लिए यह प्रयास किया है, जो प्रशंसनीय है।

यह शिक्षक न केवल बच्चों को इन माध्यमों का प्रयोग कर पढ़ा रहे हैं बल्कि उनके अभिभावकों को भी कोरोना के प्रति जागरूक कर रहे हैं। वर्तमान में चल रही कोरोना महामारी से बचने के उपाय, साफ–सफाई व सरकार द्वारा दिन–प्रतिदिन दिए जा रहे दिशानिर्देशों यथा सोशल डिस्टेंसिंग तथा आरोग्य ऐप डाउनलोड करने जैसी दूसरी महत्वपूर्ण जानकारियों को भी इन्हीं व्हाट्सएप समूह के सहारे अभिभावकों तक पहुँचाकर समाज को इस महामारी से दूर रखने में अपनी अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षकों के इन प्रयासों की समाज सराहना कर रहा है।

डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र
आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट, बस्ती
9415047039
Email: sarvestkumar@gmail.com

मिशन गीत

रचयिता
सुमन शर्मा,
इं0 प्रधानाध्यापक,.
पूर्व माध्यमिक विद्यालय
मॉकरौल
विकास खण्ड–इगलास,
जनपद–अलीगढ़।

मिशन की गौरव गाथा

मिशन शिक्षण संवाद के अथाह सागर में,
छिपे हैं सहस्रों अनमोल रत्न।
बेसिक शिक्षा के उत्थान में,
कर रहे हैं शिक्षक निरंतर प्रयत्न।
स्वरों से सजी है स्वरांजलि,
संग्रह कविताओं का काव्यांजलि।
लेख का कॉलम दर्शाता है, कलम की शक्ति
नव विचारों को पंख देता है विचारशक्ति।
जो भी शिक्षक करते हैं, कार्य महान,
मिशन ने दिया उन्हें 'अनमोल रत्न' का सम्मान।
सुगमतापूर्वक शिक्षण में डाल दी है जान,
टी.एल.एम. निर्माण को भी दी है पहचान।
आओ हाथ से हाथ मिलाएँ।
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ।
स्वामी विवेकानंद और डॉ0 कलाम के विचारों से,
बच्चे निखरें, बनें सितारे और खिलें कमलों से।

बेसिक शिक्षा
के
अनमोल रतन

माह के अनमोल रत्नों को नमन

४१४ गोपाल कृष्ण श्रीवास्तव (राजन) प्र.अ.

पूर्व माध्यमिक विद्यालय शिवाला मऊ, मसौधा, जनपद–अयोध्या, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/02/blog-post_57.html

४१५ मूलचन्द्र (प्र०अ०)

प्रा० वि० सूरतगढ़ ब्लॉक– अतरौली, जनपद– अलीगढ़ राज्य– उ०प्र०

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/02/blog-post_31.html

४१६ सुबोध कुमार (इ०प्र०अ)

प्रा०वि० नगला मढिया, शीतलपुर, एटा, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/02/blog-post_86.html

४१७ नाजिया इस्हाक (प्र०अ०)

कम्पोजिट स्कूल न०19 हमदर्द नगर डी जमालपर नगर (अलीगढ़), उ०प्र०

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/02/19.html

४१८ रामेश्वरी लिंगवाल (स०अ०)

रा०क०उ० प्रा०वि० ज्ञानसू (नवीन) ब्लाक– भटवाड़ी, जनपद– उत्तरकाशी, उत्तराखंड

Https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/03/blog-post_0.html

अनमोल बाल रत्न

चक्का फैंक मण्डल विजेता

नाम – कुलदीप

जन्म तिथि
10–11–2006

गाँव इटरौरा पिलखिनी

पिता – श्री लक्ष्मी कान्त
माता – श्रीमती सोमवती

उपलब्धि – चक्का फेंक में मंडल में प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं गोला फेंक में मंडल में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

श्रीमती मोनिका सिंह
सहायक शिक्षिका,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय मलवां,
विकास खण्ड–मलवां,
जनपद–फ़तेहपुर।

आज के बालक ही कल के नागरिक

किसी भी राष्ट्र का भविष्य उस राष्ट्र के बालक/बालिकाओं में निहित होता है क्योंकि आज के बालक ही कल के नागरिक बनेंगे। देश के इस भविष्य की जिम्मेदारी होती है हम शिक्षकों की जोकि अपने बच्चों का पहला रोल मॉडल होता है। पर कतिपय कारणों से समाज में शिक्षकों की छवि आरामतलब व्यक्तित्व के रूप में उभरकर आती है।

आम जनमानस को महसूस होता है कि शिक्षकों को हर समय आराम से अवकाश मिल जाता है, एक तो पाँच से सात घंटे की नौकरी फिर गर्मी में ग्रीष्म अवकाश अधिक ठंड पड़ने पर भी अवकाश।

इस समय कोरोना जैसी महामारी की वजह से भी शिक्षक भी आम जनमानस की तरह घर पर अवकाश प्राप्त कर बैठे हैं। लेकिन लोगों को विदित नहीं होता कि एक शिक्षक कभी भी अवकाश पर नहीं होता है उसे अपने विद्यालय के हर एक बच्चे की फिक्र होती है।

अध्यापक या गुरु और गुरु का शाब्दिक अर्थ ही सम्पूर्ण है जो संपूर्णता की ओर ले जाए। इस संपूर्णता को प्राप्त करने के लिए (जो सामान्यतः ज्ञान प्रदान करना, किताबों की विद्या प्रदान करने जैसा मात्र लगता है उसके लिए) एक अध्यापक को विभिन्न क्रियाकलाप सोचने पड़ते हैं जैसे कहानी, प्रश्न, वर्णन, कविता, टीएलएम। यहाँ तक कि उसका अपने बच्चों से वार्तालाप। शिक्षकों के आयाम यहीं तक सीमित नहीं है निरंतर इन विधाओं में उसे अपडेट भी रहना आवश्यक है।

इसलिए विद्यालय का संधि विच्छेद करने पर हमें विद्या. आलय अर्थात् विद्या का घर अर्थात् जहाँ विद्या शब्द की प्राप्ति होती है घर जैसे स्थान पर और तो और स्कूल शब्द जो सभी को रटा हुआ है। इस शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द Leisure से हुई है। जिससे तात्पर्य ही 'अवकाश' है। प्राचीन यूनान में अवकाश के स्थलों को ही विद्यालयों के नाम से संबोधित किया जाता था। अवकाश काल को ही आत्म विकास समझा जाता था जो एक निश्चित स्थान पर किया जाता था जो बाद में एक निश्चित उद्देश्य व पाठ्यक्रम की प्राप्ति के लिए स्कूल बन गए।

तात्पर्य यह है कि अध्यापक सदैव ही मनन, चिंतनशील व अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है इसके लिए समर्पित व्यक्ति आराम तलब कैसे हो सकता है। राष्ट्र निर्माता के रूप में एक शिक्षक सदैव अपने कार्यों के प्रति तत्पर रहता है।

ऋतु दुबे
प्राथमिक विद्यालय अण्डूतारा
(अंग्रेजी माध्यम),
जनपद–अयोध्या।

वर्तमान शिक्षा की समस्याएँ

शिक्षण संवाद

एक शिक्षक होने के नाते प्राथमिक स्तर पर वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को लेकर मैं हमेशा दुविधा में रहता हूँ। छात्र के हिसाब से पढ़ाने में सरकारी आदेश की अवहेलना होती है जबकि बच्चे पाठ्यक्रम से अलग हटकर पढ़ाने में ज्यादा खुश नजर आते हैं। शिक्षा के पूरे काल में एक अध्यापक के लिए प्राथमिक स्तर पर शिक्षण कार्य करना सर्वाधिक कठिन है क्योंकि यहाँ शिक्षा से अधिक जरुरी छात्र से आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करके उसे खुद से जोड़ना होता है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षक का मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध हर छात्र से पृथक पृथक होना जरुरी है ऐसे में प्रत्येक विषय का नियमित घंटा, घंटे का निर्धारित पाठ्यक्रम, पाठ को पढ़ाने की निर्धारित शिक्षण विधियाँ और कक्षा कक्ष व्यवस्था, सब गैर प्रासंगिक हो जाते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्र के मनोवैज्ञानिक स्तर तक अध्यापक को स्वयं आना पड़ता है और उस स्तर के साथ छात्र को जोड़ते हुए उसे विषय के स्तर तक लाना ही अध्यापक का कौशल और दक्षता है। प्राथमिक स्तर में प्रत्येक छात्र का अधिगम स्तर, उसकी रुचियाँ, विशेषताएँ, कार्य क्षमता और उसके स्वभाव की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिसे नजरअंदाज करने से उसके मानसिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा विभाग की नजर में शिक्षा का अर्थ उसके द्वारा बनाये गए पाठ्यक्रम को उसके द्वारा निर्धारित किये गए तरीके से या दिए गए प्रशिक्षण के अनुसार निर्धारित कालांशों में पूरा कर छात्र के दिमाग में इस प्रकार फिट करना भर है जिससे वह निरीक्षणकर्ता को संतुष्ट कर सके। पर मेरी नजर में यह शिक्षण की उचित पद्धति नहीं है। शिक्षा तो वह है जो जीवन उपयोगी हो, जिससे हमारी समस्याओं का निदान हो, जिससे छात्र के मन में उठ रहे प्रश्नों के उत्तर मिलें, जो उसके भौतिक और सामाजिक परिवेश के नैतिक मूल्यों के अनुरूप हो पर क्या वास्तव में हम ऐसी शिक्षा पद्धति का विकास कर सके?शायद अभी तक व्यवहारिक रूप से ऐसा देखने को नहीं मिला है। ज्यादातर विद्यालयों में एक कठोर अनुशासन है जहाँ प्रार्थना सभा के समाप्त होते ही हर 30 या 40 मिनट में एक अध्यापक कक्षा में प्रवेश कर निर्धारित पाठ्यक्रम को पढ़ाकर बाहर आ जाता है और नया अध्यापक कक्षा में पहुँच जाता है।

हमारे पाठ्यक्रम में अत्यधिक नीरसता है। ऐसा जरुरी नहीं है कि सभी बच्चे गणित में रूचि रखते हों। कुछ छात्रों को तो संस्कृत की किताब में लिखे शब्द ही आज तक समझ नहीं आये पर शिक्षा के लिए इस विषय को पढ़ना और इसमें पास होना जरुरी है भले ही जीवन में इस विषय का उपयोग कभी नहीं होता हो। ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के अधिकांश बच्चे अंग्रेजी से दूर भागते हैं क्योंकि एक भाषा के रूप में उनके परिवेश में यह प्रचलन में नहीं है फिर भी इसे सीखना ज्यादा आवश्यक माना जाता है। शिक्षाविदों को लगता है कि किसी कक्षा में बैठे सभी बच्चे एक समान बुद्धिलब्ध के होते हैं और किसी घंटे में पढ़ाये गए सभी तथ्य आसानी से समझ सकते हैं पर व्यवहारिक रूप से यह एक कोरी कल्पना मात्र हैं। वास्तविकता तो यह है कि कई बच्चे किसी विषय वस्तु को कई बार बताने के बावजूद भी नहीं सीख पाते हैं। अधिकांश छात्र कक्षा में अपने मनपसंद विषय को ही पढ़ना चाहते है, उनके अनुसार भाषा का महत्व केवल लिखना और पढ़ना भर है और व्याकरण उन्हें अच्छा नहीं लगता है, ऐसे में भारी भरकम व्याकरण को प्रारंभिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में रखना औचित्यहीन ही है। पर वर्तमान शिक्षण प्रणाली छात्रों को मनपसंद विषय और विषय में मनपसंद पाठ को पढ़ने और पढ़ाने की अनुमति नहीं देता उनके अनुसार विज्ञान का

10 वां पाठ तो जनवरी माह में ही पढ़ाया जाना तय है। कक्षा के सभी छात्रों की रुचियाँ अलग अलग हैं और जब उन्हें उनकी रूचि का पढ़ने को नहीं मिलता है तो वह अध्यापक द्वारा पढ़ाये जा रहे गैर रुचिपूर्ण विषयों को अपने दिमाग में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देते हैं और अध्यापक को विषयवस्तु उन तक पहुँचाना नामुमकिन हो जाता है। ज्यादातर छात्रों को कला क्राफ्ट खेलकूद में ज्यादा रूचि होती है पर सिस्टम इन्हें सीमित रखकर इतिहास भूगोल गणित और विज्ञान सिखाने के निर्देश देता है।

यहाँ यह भी समझना जरूरी है कि अच्छी शिक्षा के लिए स्कूल ही एक मात्र उपाय नहीं है। 12 साल की उम्र तक विद्यालय ना जाने बाले विवेकानंद जी ने पूरी दुनिया को अपने ज्ञान से विस्मित कर दिया। अँगूठा टेक तुलसीदास और कबीरजी पर पीएचडी कर हजारों छात्र डिग्री कॉलेज में व्याख्याता हो गए जबकि ये शायद ही प्रारम्भिक कक्षाओं में पढ़ने गये हो और अगर इन्हें प्रारंभिक कक्षाओं से ही सभी विषय पढ़ने को बाध्य किया जाता तो हमारा देश इनके गुणों और प्रतिभाओ से वंचित हो जाता। महान वैज्ञानिक आइंस्टीन को तो उनके विद्यालय ने पढ़ाने से इंकार कर दिया था और वह अपनी माँ की कक्षा में पढ़कर दुनिया में सबसे बड़े वैज्ञानिक बने।

एक अध्यापक होने के नाते हमारा यह दायित्व है कि हम बच्चे को पढ़ाने की बजाय उसके सुगमकर्ता बनें और प्रारंभिक कक्षाओं से ही उसकी प्राकृतिक क्षमताओं को पहचान कर उनके विकास में सहायता करें पर हम व्यवस्था की बाध्यताओं के कारण स्वयं ही इन क्षमताओं के दमन का कारण बन जाते हैं। अध्यापक विभाग द्वारा जारी आदेशों के पालन को ना सिर्फ बाध्य है वरन स्थानीय अधिकारियों की निरंकुश कार्यवाही बुरी तरह डरे हुए हैं, ऐसे में हम केवल वह ही पढ़ाना चाहते जिसको पढ़ाने से हमारी नौकरी पर खतरा ना हो और वह रिपोर्टिंग करते हैं जिससे उनकी सेवा पुस्तिका पर कोई प्रतिकूल टिप्पणी अंकित न हो।

वास्तव में जिस छात्र में प्रारंभिक कक्षा से ही संगीत में रूचि हो तो उसे केवल संगीत की ही शिक्षा दी जाए और अन्य विषय उसके लिए औपचारिकता मात्र कर दिए जाएँ, खेल कौशल रखने वाले छात्रों को स्कूल के प्रारम्भ के घंटे से मैदान और खेल प्रशिक्षक के साथ खेलते हुए ही विद्यालय का दिन खत्म करने की अनुमति मिले पर इसके उलट हम उसके दिमाग में सभी विषय और सभी तरह की कलाएँ घुसाने के लिए प्रयासरत हैं जिससे वह अपने जीवन में किसी भी विधा में पारंगत नहीं हो पाता है। इतनी सारी शैक्षणिक विधियों की खोज, विद्यालयों में सुविधा और संसाधन और व्यवस्थित अध्यापन के बाद भी हम पिछले 100 वर्षों दुनिया को कुछ नया नहीं दे सके हम ओलिम्पिक में मैडल के लिए तरस रहे हैं क्योंकि हमने प्रारंभिक कक्षाओं से ही छात्र की प्रतिभा के अनुरूप प्रशिक्षण देना शुरू नहीं किया है हम तो गाँव के सरकारी विद्यालय में मजबूत कदकाठी वाले छात्र के दिमाग में गणित के फार्मूला फिट करने में व्यस्त हैं और शहर के कान्वेंट में पढ़ने वाले मरियल छात्र को प्ले ग्राउंड में रगड़कर खिलाडी बनाने पर आमादा हैं। जब तक लोग शिक्षा के इस मर्म को नहीं समझेंगे तब तक देश और समाज उपलब्धियों से वंचित होता रहेगा।

अवनीन्द्र सिंह जादौन,
संयोजक मिशन शिक्षण संवाद उत्तर प्रदेश,
278 कृष्णापुरम कॉलोनी,
सराय दयानत कचौरा रोड इटावा,
उत्तर प्रदेश।

विचारशक्ति

मिशन शिक्षण संवाद-
हर शिक्षक के लिए जरूरी और उपयोगी।

शिक्षण संवाद

सर्वप्रथम मिशन शिक्षण संवाद के संस्थापक आदरणीय विमल सर का बहुत बहुत आभार कि उन्होंने बेसिक शिक्षा और शिक्षकों के प्रति समाज में जड़ जमा चुकी और पूरी तरह से फैल चुकी नकारात्मक छवि को मिशन और मिशन के लिए समर्पित मिशन के सिपाहियों के साथ मिलकर इस नकारात्मक छवि को जड़ से खत्म करने का अमूल्य प्रयास किया है।

आज अपनी सकारात्मकता, सार्थकता और समर्पण भाव के बलबूते पर मिशन शिक्षण संवाद उत्तर प्रदेश की सीमाओं को लांघ चुका है। यह सब एक दिन में या अचानक नहीं हुआ है। इसके पीछे उन कर्मयोगियों का समर्पण है जिन्होंने मिशन को समझा ही नहीं बल्कि मिशन को जिया है।

तन, मन, धन से समर्पित तथा पद, प्रतिष्ठा, मान–सम्मान, नाम से खुद को दूर रखा तथा स्वयं की पहचान छुपाकर, खुद को आगे न बढ़ाकर उन शिक्षकों को आगे बढ़ाया जो मिशन के मूल उद्देश्य को समझ सकें। हमारी(एक शिक्षक की)पहचान हमारे विद्यालय और हमारे छात्रों से ही है। समाज हमें हमारे कार्यों और हमारे व्यवहार से जानता है और यही हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

सर्वप्रथम हमारे विद्यालय का परिचय, प्रचार और पहचान हमारे विद्यालय के बच्चों से ही होती है। जिन घरों से निकलकर ये बच्चे अपने/हमारे विद्यालय आते हैं और जब यही बच्चे कुछ नया सीखकर छुट्टी के बाद वापस अपने घरों को लौटते हैं तब पूरे विद्यालय की हर एक घटना को चाहे हमारी उपस्थिति हो, पढ़ाई हो, हमारी हर एक गतिविधि को अपने–अपने घरों में अपने माता–पिता और परिवार से साझा करते हैं। हमारी छवि कैसी है?हम क्या पढ़ाते हैं? कैसा पढ़ाते हैं?यह सब बच्चों के व्यक्तित्व में दिखता है। बच्चे हमारा अनुसरण करते हैं। यही बच्चे समाज में हमारी पहचान बनाते हैं। जब हम संपर्क के लिए इन बच्चों के घरों पर जाते हैं और उनके परिवार और अभिभावकों से मिलते हैं तब हमें उन बच्चों के माता–पिता या अभिभावकों के हमारे प्रति व्यवहार से सब कुछ अपने आप बयाँ हो जाता है। क्या बात है कि बहुत से अभिभावक हमें अपने घर पर आया हुआ देखकर कुर्सी, चारपाई लाने के लिए दौड़ पड़ते हैं। हमसे बैठने, कुछ खाने पीने तक का आग्रह करते हैं।

अपने हर सामाजिक समारोहों में हमें सादर आमंत्रित करते हैं। क्यों इतना सम्मान देते हैं?क्यों है इतना लगाव हमसे?क्यों? क्यों हमारे विद्यालय के बच्चे हमारे लिए अपने खेत का बथुआ, गन्ना और बाग में लगी अमिया या बेर, कमरख, आंवला लेकर आते हैं। क्यों?क्यों अपने घरों से अमरूद और जामुन लेकर आते हैं? क्यों हमारे विद्यालय से उत्तीर्ण होकर अन्य विद्यालयों में जा चुके हैं फिर भी हमसे मिलने आते हैं, हमसे अपनी पढ़ाई–लिखाई की बातें साझा करते हैं। हमें फोन करते हैं और हमारे जैसा बनना चाहते हैं। आखिर क्यों?

जब अभिभावक स्वयं विद्यालय चलकर आते हैं और सबके सामने यह कहते हैं कि ये मास्टर जी या ये गुरू जी या सर जी या मौलवी साहब या पंडित जी बहुत अच्छे हैं। हमारी

तारीफ आखिर वो क्यों करते हैं? क्यों अपने बच्चों को हमारे भरोसे पर हमारे विद्यालय में नामांकन करवाते हैं? क्यों हमारे एक बुलावे पर हर समय वो खड़े रहते हैं?अपने जरूरी काम को भी छोड़कर?क्यों? क्योंकि हम अपनी जिम्मेदारियों को समझते हैं। हमारा पहला कर्तव्य है शिक्षक धर्म। समय का पालन। नियमित अध्ययन और अध्यापन। अभिभावकों से नियमित संपर्क। अपने विद्यालय के हर बच्चे से लगाव तथा जुड़ाव और ये तभी संभव होता है जब हम एक–दूसरे से मिलें, एक दूसरे से संवाद करें।एक दूसरे की भावनाओं को समझें और उनका सम्मान करें। जब हमें हमारे विद्यालय के हर बच्चे का नाम पता होगा, हर बच्चे के माता–पिता या अभिभावकों का नाम पता होगा तो निश्चित ही हमारी पहचान बताने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

आज हमारे विद्यालय के हर बच्चे और अभिभावकों के पास हमारा मोबाइल नं उपलब्ध है और मेरे पास उनका। तकनीकी के इस युग में संचार का यह माध्यम बहुत ही सशक्त हो चुका है। विद्यालय पहुँचकर जो भी बच्चे अनुपस्थित हैं इसके माध्यम से पूरी जानकारी उनके अभिभावकों से स्वयं ही मिल जाती है। बच्चों के व्हाट्सएप्प नंबर हैं। पढ़ाई लिखाई की बातें साझा करते हैं।

जब हम नियमित विद्यालय आते हैं, समय का पालन करते हैं, प्रार्थना सभा में बच्चों को कुछ नया सिखाते हैं, अपने माता–पिता, भाई बहन, सहपाठियों और बड़ों का सम्मान करना सिखाते हैं और उन्हें नियमित पठन–पाठनध्अध्ययन और गृहकार्य करने को प्रेरित करते हैं तो निश्चित रूप से हमारे विद्यालय और हमारी पहचान समाज में स्वयं ही बनने लगती है।

हमारी पहचान हमारे विद्यालय और हमारे विद्यालय के बच्चों से होती है। जब भी किसी प्रतियोगिता का आयोजन होता है और मंच से विजेता बच्चों का नाम उनके विद्यालय के नाम के साथ जोड़कर पुकारा जाता है और उन्हें निखारने वाले शिक्षक को मंच पर बुलाया जाता है तो हम सब सोच भी नहीं सकते हैं कि उस समय उस शिक्षक के मन में क्या अनुभूति होती है। अखबार के पन्ने में बरबस ही हमारे विद्यालय के बच्चों की सफलता की कहानी छप जाती है।

जब हमारे विद्यालयों में पढ़े बच्चे अपनी काबिलियत से हमारे द्वारा प्रदत्त शिक्षा से हर जगह हर क्षेत्र में, चाहे वह परिवार हो, समाज हो, अपनी पहचान बनाते हैं तो हमारे लिए यही सबसे बड़ा सम्मान है। हमें गर्व होता है जब हमारे विद्यालयों में पढ़े बच्चे अपने छोटे भाई और बहनों को उनका नामांकन हमारे विद्यालय में कराने के लिए आते हैं। हमें गर्व होता है अपने आप पर जब अभिभावक कॉन्वेन्ट विद्यालय से अपने बच्चे का नाम कटवाकर हमारे विद्यालय में नामांकन के लिए आते हैं। इससे बड़ा सम्मान और इससे बड़ी पहचान हमारी क्या हो सकती है?

विद्यालय समय के बाद जब हम अपने निवास की ओर प्रस्थान करते हैं तो पूरे रस्ते में मिलने वाले हर बच्चे, बड़े सब एक–दूसरे को इतना सम्मान देते हैं जिससे हमें हमारे शिक्षक होने पर गर्व होता है। निश्चित रूप से मिशन शिक्षण संवाद ने हम शिक्षकों के सम्मान और बेसिक शिक्षा के उत्थान की खातिर जो बीड़ा उठाया है उसके उद्देश्यों को हम सबको जन–जन तक पहुँचाने का कार्य करना है। बेसिक शिक्षा की खो चुकी पहचान और शिक्षक के सम्मान को पुनः स्थापित करने के लिए मिशन शिक्षण संवाद ने जो कार्य किये हैं और निरन्तर किये जा रहे हैं वो अपने आप में एक आदर्श हैं।

पहले हम सब जिन चीजों को व्यक्तिगत रूप से अपने–अपने विद्यालयों में कर रहे थे

चाहे वो पढ़ाई की कोई नयी तकनीक हो ,कोई नवाचार हो या शिक्षण सम्बन्धी अन्य कार्य हों वो हमारे तक ही सीमित रह जाते थे। विद्यालय की चहारदीवारी के बाहर नहीं पहुँच पाते थे। हम सब उन उत्कृष्ट शिक्षकों के द्वारा शिक्षा के लिए किये जा रहे प्रेरक कार्यों को नहीं जान पाते थे। लेकिन धन्यवाद देना चाहूँगा आदरणीय विमल सर को जिन्होंने विद्यालय की चहारदीवारी के अन्दर बन्द शिक्षकों की प्रतिभा को पहचानकर समाज में उसे प्रसारित और प्रचारित करने का अद्भुत, अद्वितीय और वंदनीय कार्य किया। मिशन के माध्यम से आज बेसिक शिक्षा की बदलती तस्वीर समाज और लोगों के समक्ष ही नहीं अपितु शासन और प्रशासन के समक्ष भी पूरे सम्मान के साथ पहुँच रही है।

निश्चित रूप से हम सब एक साथ मिलकर समाज में बेसिक शिक्षा और शिक्षकों की पहले से भी अच्छी छवि बनायेंगे ऐसा हम सब संकल्प करें।

आओ करें हम मिलकर दृढ़ संकल्प।
हम सब मिशनमय हो जायें, मिशन का कोई नहीं विकल्प।।
आओ करें हम मिलकर दृढ़ संकल्प।।
आओ करें हम मिलकर दृढ़ संकल्प।।।

ओमकार पाण्डेय
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय किरतापुर,
विकास खण्ड–सकरन,
ज्नपद–सीतापुर।

विचारशक्ति

दीक्षा की शिक्षा

शिक्षण संवाद

प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुरुकुल प्रथा द्वारा गुरु शिष्य परम्परा संचालित थी। गुरु द्वारा शिष्यों को दीक्षा दी जाती थी। इसी दीक्षा का प्रयोग सामाजिक जीवन में शिष्यों द्वारा किया जाता था और समाज में उच्च मानक स्थापित किये जाते थे। गुरूकुलों में सद्व्यवहार व सच्चरित्र का विकास गुरुओं द्वारा किया जाता था। गुरुकुल शिक्षार्थ प्रवेश–सेवार्थ प्रस्थान की परम्पराओं से ओत प्रोत रहते थे।।

चूँकि सीखना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है तथा शिक्षा इसका एक उपक्रम है। हम सभी नियमित शिक्षा के अतिरिक्त अपने वातावरण, पर्यावरण एवं विभिन्न प्रकार के घटनाक्रमों से पल प्रतिपल कुछ न कुछ सीखते रहते हैं, जोकि हमारी रुचि, स्तर, प्रति एवं अनुभव द्वारा प्रमाणित होता है। अनुभवों पर बार–बार विश्लेषण करने व अनुप्रयोग करने से समझ गहरी होती है। यह सिद्धांत छात्रों व शिक्षकों पर सदैव से समान रूप में कार्य करता रहा है। इसी सीखने की प्रक्रिया एवं छात्रों के अधिगम स्तर को परखने के लिए, प्राचीन समय से ही विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं का आयोजन किया जाता रहा है। वर्तमान में भारत सरकार द्वारा स्थापित नीति आयोग द्वारा ऐसे सूचक(**Indicator**) निर्धारित किये गए हैं जिनको **School Education Quality Index(SEQI)** कहा जाता है। कुल 30 सूचकों (**Indicator**) द्वारा स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता निर्धारित की जा रही है।।

प्राचीन समय से ही प्रत्येक गुरु द्वारा अपने शिष्य को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जाती रही है फिर चाहे वह शास्त्र की हो या शस्त्र की। परन्तु प्राथमिक शिक्षा सदैव से महत्वपूर्ण रही है, यही जीवन की आधारशिला होती है। देश के विभिन्न स्कूलों में शिक्षकों द्वारा सामान्य परम्परा से हटकर अभिनव प्रयोगों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण स्कूली शिक्षा छात्रों को प्रदान की जा रही है। इन्हीं अभिनव प्रयोगों को डिजिटल क्रांति के युग में संचालित करने व अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता ने एक मोबाइल एप्प को जन्म दिया जिसे नाम दिया गया "**DIKSHA**"। दीक्षा भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को ध्यान में रखते हुए विकसित किया गया है।

DIKSHA&Digital Infrastructure For Knowledge Sharing दीक्षा एप्प पर उपलब्ध विषय सामग्री विभिन्न भारतीय भाषओं, विभिन्न शिक्षा बोर्डों को ध्यान में रखते हुए विकसित की जा रही है।।

उ0 प्र0 सरकार द्वारा भी बेसिक शिक्षा के पाठ्यक्रम के दृष्टिगत इसे लगातार अपडेट किया जा रहा है। इसके बेहतर प्रयोग के लिए पाठ्य पुस्तकों को Q R कोड आधारित बनाया जा रहा है तथा उसका डिजिटलाइजेशन करते हुए **e&book** फॉर्म में तथा कंटेंट को वीडियो, ऑडियो, कहानी, कविता आदि के रूप तैयार कर दीक्षा एप्प को समृद्ध किया जा रहा है। यह सब इस रोचक तरीके से तैयार किया जा रहा है कि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया रुचिकर हो रही है। शिक्षकों द्वारा इन तकनीकों का प्रयोग अपने शिक्षण में बेहतर तरीके से किया जा रहा है।। वैश्विक महामारी **COVID**–19 के कारण सरकार द्वारा स्कूल बन्द करने एवं देश मे लॉकडाउन होने के समय दीक्षा द्वारा महत्वपूर्ण रोल अदा किया जा रहा है। **Work from Home** करते हुए अधिकांश शिक्षकों द्वारा छात्रों के अभिभावकों से वार्ता कर उनको दीक्षा का प्रयोग सिखाते हुए शिक्षण किया जा रहा है, वह भी रुचिकर तरीके से यही तो है दीक्षा की शिक्षा।

संजीव कुमार शर्मा, प्रधानध्यापक(प्रभारी)
उच्च प्राथमिक विद्यालय राजमार्गपुर,
विकास खण्ड–अतरौली, जनपद–अलीगढ़,
सदस्य–उ0 प्र0 राज्य सन्दर्भदाता समूह(**UPSRG**) अलीगढ़। **Email : sanjeevatrauli@gmail-com**

विचारशक्ति

अपराध एक प्रवृति

शिक्षण संवाद

जीवन अपना हो या किसी दूसरे का बहुत ही कीमती होता है इसे नष्ट करना या खत्म करना ठीक नहीं है। समाज को कानून को गलत और विकृत मानसिकता वाले लोगों की कुटिलता को समझने में बहुत समय लग जाता है क्योंकि वो लोग तो परिपक्व अपराधी प्रवृति में कुछ जीवन जी चुके होते हैं कुछ अपराध भी कर चुके होते हैं इसलिए उनका भयावह रुप दृढ़ और निष्ठुर हो जाता है। यह भी आवश्यक है कि किसी निरपराध को भी सजा न मिले। किसी बेटी और बेटे का अपराधी नृशंस हत्यारा अब कोई किसी का बेटा न बने इसका हमें ध्यान रखना चाहिए।

"स्नेह पा मुस्कुरा रही,
देती सदा मुस्कान ही खुबसूरती,
प्रति की संतान भी वरदान भी
अनमोल होती हैं मन वचन कर्म से सर्वदा
सम्मान की रक्षा करो व बेटियों के प्राण की"

भारतीय संस्कृति में नारी जाति का सम्मान महत्वपूर्ण है परिवार में बेटियों की बचपन से ही हल्की सी मुस्कराहट परिवारीजनों को आल्हादित कर देती है। एक तरफ हमारे समाज ने प्रचलित बहुत से पूर्वाग्रहों व अवधारणाओं को तोड़ा है जिससे कि समाज में नारी जाति को समान शिक्षा देने समान व्यवहार करने के सकारात्मक परिणामस्वरुप बेटियाँ शिक्षा, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, शिल्प के उच्च शिखरों, अंतरिक्ष तक पहुँच चुकी हैं। भारतीय खेलों, सेना, प्रशासन आदि में पुरुषों के समकक्ष अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित कर पा रही हैं। महिलाओं को बेटियों को शिक्षित करने में महिला वर्ग के साथ–साथ जागरूक व शिक्षित पुरुष वर्ग का पूरा–पूरा सहयोग व योगदान है। वहीं समाज का दूसरा पक्ष आज भी महिलाओं को उपभोग की वस्तु ही समझता है इसी का परिणाम हमारे समाज में निर्भया काण्ड जैसे घिनौने अपराध होते हैं, जिन अपराधों में छोटी उम्र की भी नाबालिग

मासूम बच्चियाँ व बच्चे भी यौन शोषण का शिकार हो जाते हैं। यह सब अशिक्षित व गिरी हुई मानसिकता का प्रतीक है जिसका अच्छे विचारों वाला पुरुष वर्ग भी समाज में विरोध करता है। समाज में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए।

दुर्लभ निधि है यह
इसे पाया है जिसने जाना है,
माता–पिता को बेटियाँ
समझें बड़ा खजाना है।
सुख में सुखी दुख में दुखी
पित मात के रहती सदा,
रंगों से आँगन भर चलीं सजना का घर सजाना है।

संतान अनमोल होती है यह माता–पिता के लिए प्रकृति का एक खूबसूरत उपहार होती है इसलिए हमें बेटियों के साथ–साथ बेटों को भी नैतिक मूल्यों की शिक्षा देते रहना अति आवश्यक है। अपराध एक प्रवृति है जो किसी भी उम्र के व्यक्ति को अपराधी बना देती है। जघन्य अपराध करने वाला सिर्फ अपराधी होता है, वो नाबालिग या आरोपी नहीं होता। ऐसा अपराधी सदैव दण्ड का ही पात्र होता है सामाजिक रुप से अपराधी को दण्ड शीघ्रता से मिलना आवश्यक है जिससे कि आपराधिक प्रवृत्तियों को बल न मिल सके।

नैमिष शर्मा
अध्यापिका,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय तेहरा,
विकास खण्ड व जनपद–मथुरा।

बात महिला शिक्षकों की

मैं एक शिक्षिका हूँ, मुझे इस बात पर गर्व है।

उषा देवी

सहायक शिक्षिका,
प्राथमिक विद्यालय तलकापुर,
विकास खण्ड–हथगाम,
जनपद–फतेहपुर।

शिक्षण संवाद

एक शिक्षक बच्चे के जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षकरूपी माली विद्यार्थीरूपी पौधे को अपने ज्ञानरूपी जल से सिंचित कर व उसका सर्वांगीण विकास कर मनुष्य रूप में पुष्पित व पल्लवित करता है। वह अपने ज्ञान, धैर्य, सहनशीलता आदि गुणों से विद्यार्थी को धनात्मक रूप से प्रभावित करता है जिसकी स्पष्ट छाप विद्यार्थी में देखी जा सकती है।

जहाँ तक एक महिला शिक्षक का प्रश्न है, एक महिला शिक्षक बच्चों के अनकहे मनोभावों को बड़ी ही सहजता से समझने तथा उनकी समस्याओं, जिज्ञासाओं व प्रश्नों के निदान करने में पुरुष शिक्षकों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक सक्षम होती है। इसका एक कारण यह भी है कि बालिकाएँ अपनी समस्याओं का प्रकटीकरण पुरुष शिक्षकों के समक्ष करने में असहज अनुभव करती हैं।

एक महिला शिक्षक अपनी करुणा, दया, सहनशीलता, संवेदनशीलता आदि गुणों के कारण सम्पूर्ण विद्यालय के बच्चों को अनुशासित व संयमित कर सकती है। एक महिला शिक्षक स्नेहमयी व्यवहार के साथ–साथ सख्ती का उचित संतुलन कर बच्चों को अनुशासित करने तथा ज्ञानार्जन हेतु तैयार करने में सक्षम होती है। एक महिला शिक्षक होने के नाते मैंने भी मीना मंच व अन्य माध्यमों से बच्चों की समस्याओं, जिज्ञासाओं व प्रश्नों का यथासम्भव निराकरण किया है जिससे विशेषकर बालिकाओं को अपनी समस्याओं व रुचि को उचित माध्यम प्राप्त हुआ है।

एक महिला शिक्षक विद्यालय प्रबंधन के साथ–साथ शिक्षण तथा पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों का क्रियान्वयन कुशलतापूर्वक कर पाती है क्योंकि हमारी सामाजिक व्यवस्था के अनुसार गृह प्रबन्धन की अधिकतर जिम्मेदारी महिलाओं पर होने के कारण पूर्व से ही कुशलता प्राप्त कर लेती हैं जिसका क्रियान्वयन वह विद्यालय में भी कर पाती हैं।

बच्चे एक महिला शिक्षक में मातृभाव की अनुभूति करते हैं। इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि विभागीय कार्य या अवकाश के कारण विद्यालय से जाने पर बच्चों के मुख पर उदासी का भाव स्पष्ट देखा जा सकता है। मैंने तो बच्चों में कभी–कभी प्रतिस्पर्धा तक देखी है कि मैं ही उन्हें पढ़ाऊँ। ऐसा मेरा व्यक्तिगत अनुभव है।

यह संयोग ही है कि मेरे विद्यालय में पिछले कई सत्रों से बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की संख्या अधिक रही है और मैंने विभिन्न प्रयासों से विद्यालय परिवेश को बालिकाओं के अनुकूल बनाया है। यद्यपि वर्तमान में मेरा विद्यालय एकल होने के कारण मुझे बालकों की भी समस्याओं, जिज्ञासाओं व प्रश्नों का निराकरण मुझे समभाव से करना होता है।

मुझे सर्वाधिक प्रसन्नता तब होती है जब बच्चों से यह प्रश्न पूछने पर कि आप क्या बनाना चाहते हैं, यह उत्तर प्राप्त होता है कि मैम हम भी आप की तरह शिक्षक बनना चाहते हैं। मैं बच्चों में यह भाव भरने में सफल रही कि वे भी शिक्षक बन देश सेवा में अपना योगदान देना चाहते हैं।

TLM Name - Bunch of ALPHABETS

Class: primary - Subject: English

Used Materials - Card board, coloured paper, marker, colours

How to Use - This TLM is useful for new nominations for learning English alphabets (both capital and small letters) as well- In this bunch there are 26 Grapes. representing 26 letters- Each grape has a leaf upon it which can be opened and when we open this leaf we can get small version of that capital letter- Usually we see that new learners read alphabets in cram pattern- They usually pronounce A for apple, B for ball and so on- With the help of this TLM they can understand that A is not just for apple, there are so many other words too starting with A- For the help I have written 4 or 5 words for particular alphabet.

Learning outcome: children can understand 26 English alphabets both capital and small letters- Leaving trend of A for apple, children can know more words themselves with fun.

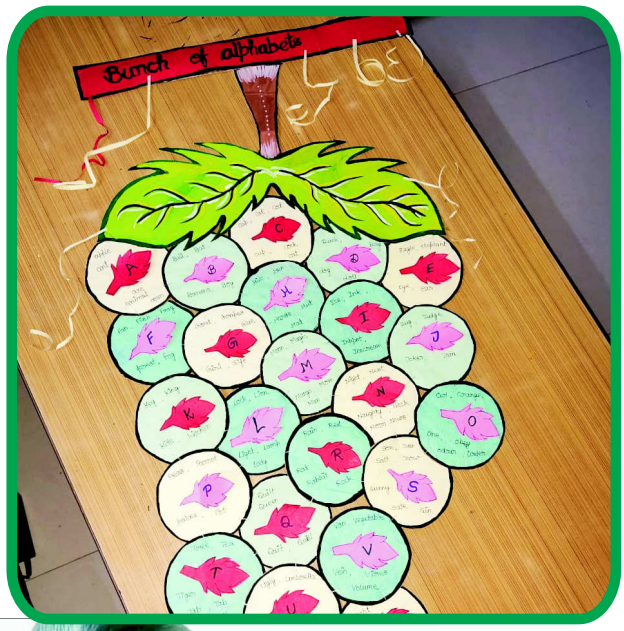

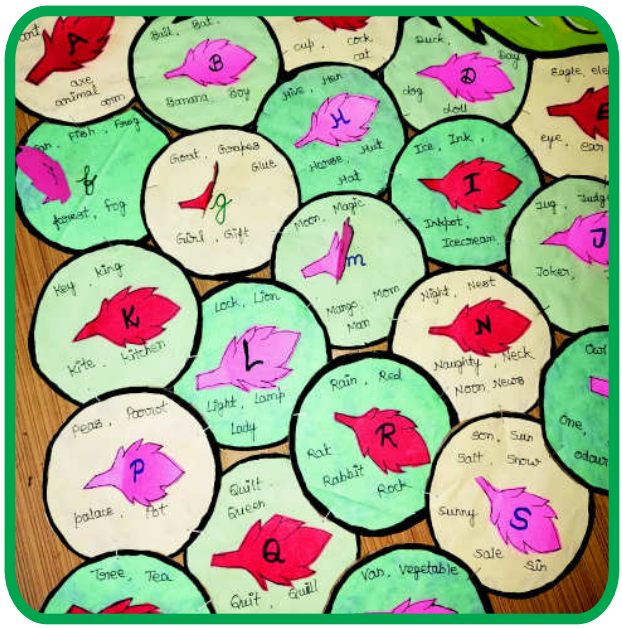

Geeta Yadav,
Head Teacher
Primary School Murarpur
Block - Devmai
District Fatehpur

टी.एल.एम. संसार – नमः संस्कृताय

कक्षा– उच्च प्राथमिक स्तर
विषय– संस्त (व्याकरण)

वर्ण तोरण

समग्री–
पुराना कलेण्डर, अगरबत्ती के खाली डिब्बे, शादी के कार्ड, फीता, कागज़, टेप।

उपयोगिता–
छात्र इस TLM के माध्यम से संस्त भाषा के स्वर और व्यंजनों से भलीभाँति परिचित हो सकेंगे।

विशेष (लर्निंग आउटकम) –
बच्चे संस्कृत गद्य एवं पद्य पाठों को शुद्धतापूर्वक उच्चारण करते हुए पढ़ सकेंगे।

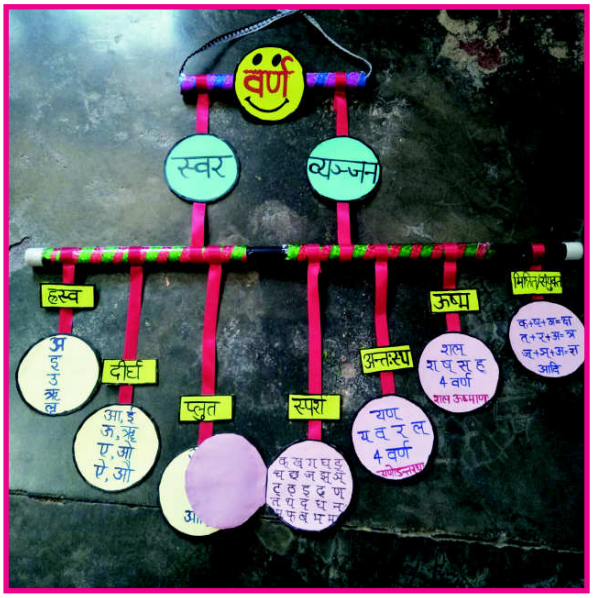

अर्चना गुप्ता
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय हाफ़िज़पुर हरकरन,
शिक्षा क्षेत्र–खजुहा,
जनपद–फ़तेहपुर।

कक्षा– प्राथमिक स्तर
विषय– गणित

Counting numbers, Addition, Less, greater and Equal to Machine

बनाने की विधि –

सर्वप्रथम कागज के गत्ते, प्लास्टिक पाइप 10, रंगीन स्केच पेन, टेप 02, फेविकोल, रंगीन चार्ट पेपर्स, आइसक्रीम स्टिक, कंचे 50 इत्यादि सामग्री को इकठ्ठा करते हैं। इस वर्किंग मॉडल के ऊपरी हिस्से में 10 बॉक्सेस बनाये गए हैं और 10 बॉक्सेस निचले हिस्से में बनाये गए हैं। प्रत्येक बॉक्स के सामने 1 से लेकर 10 तक के अंकों को लिखा है। जिस बॉक्स में जितना अंक लिखा है उस बॉक्स में उतने ही कंचे भरे जाते हैं। Counting Numbers-. सर्वप्रथम बच्चा सभी बॉक्सेस में कंचे गिनकर भरता है। इस प्रकार बच्चा अंकों को गिनना सीख जाता है। Addition.... मान लो 3 और 5 को इस मशीन से जोड़ना है तो बच्चा अंक 3 व अंक 5 की स्ट्रिप को खींचता है, बॉक्स 3 में से 3 कंचे और बॉक्स से 5 में से 5 कंचे निकलते हैं और ये सभी कंचे एक आंसर बॉक्स में आकर इकट्ठा होते हैं और फिर बच्चा गिनता है और गिनकर बता देता है कि कुल 8 कंचे आये हैं तो 3 और 5 का योग 8 होता है। Less than, greater than and equal to ... इसी प्रकार जब 3 की स्ट्रिप खींचने पर आंसर बॉक्स में 3 कंचे निकाल लेते हैं। फिर 5 की स्ट्रिप निकालते हैं और आंसर बॉक्स में 5 कंचों को निकाल लेते हैं और बच्चे के दोनों हाथों में 3 और 5 कंचों में से पूछते हैं, कौन–सा अंक छोटा या कौन–सा बड़ा है अर्थात बड़ा 5 और छोटा 3 है।

लाभ– गणित के प्रति बच्चों का आकर्षण बहुत कम होता है, इस मॉडल का मुख्य उद्देश्य है कि बच्चों में गणित के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना। इस मॉडल से बच्चों का अधिगम स्तर में बढ़ोत्तरी खेल–खेल में आसानी से की जाती है। गणित के प्रति आकर्षण बच्चों में तभी उत्पन्न किया जा सकता है जब कक्षा में नवाचार किया जाए। मॉडल से पढ़ाने से ही बच्चों में प्रतिदिन विद्यालय आने की प्रवृत्ति उत्पन की जा सकती है।

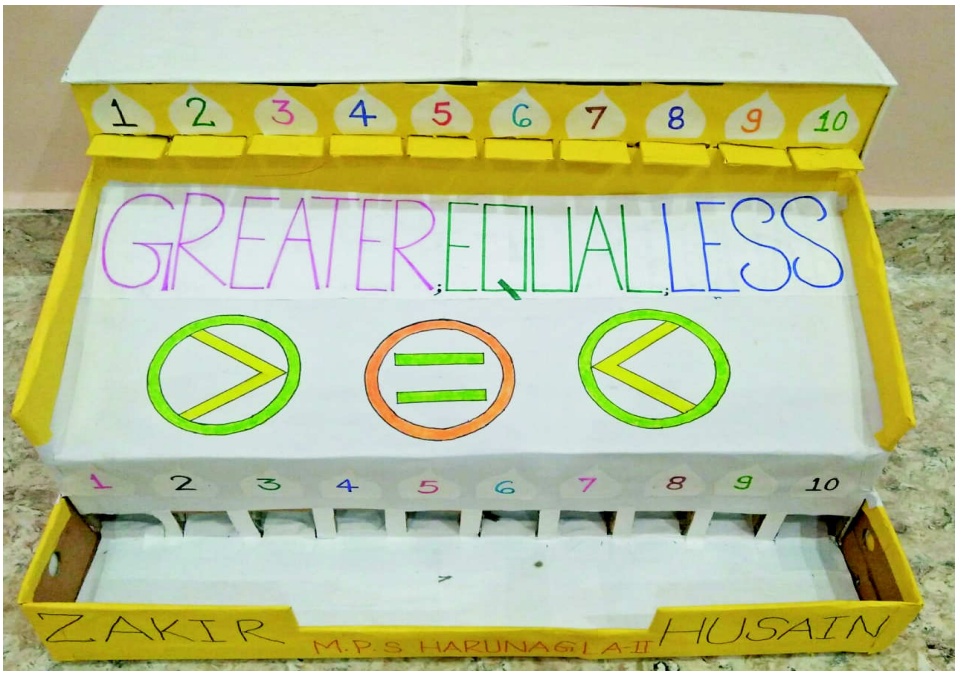

जाकिर हुसैन,
प्रधानाध्यापक,
मॉडल प्राथमिक विद्यालय
हरुनगला द्वितीय,
नगर क्षेत्र,
जनपद–बरेली।

कॉमिक्स चित्रण द्वारा शिक्षण

उद्देश्य– विषय वस्तु को सरल एवं शिक्षण को मनोरंजक बनाना।

विवरण– किसी पाठ का कार्टून में चित्रण, शिक्षा को बच्चों के लिए अत्यंत आकर्षक एवं सरल बनाता है। जब बच्चे किसी कॉमिक्स को पढ़ते हैं, तो उन कार्टूनों के नाम एवं उनके संवाद उन्हें आसानी से याद हो जाते हैं। तो जब हम किसी पाठ का कार्टून में चित्रण करके पढ़ाते हैं तो वह बच्चों को बहुत आकर्षक लगता है और वे पाठ को भी आसानी से मन लगाकर पढ़ाते हैं। कॉमिक्स चित्रण द्वारा कठिन से कठिन पाठ को भी आसानी से समझाया जा सकता है।

लर्निंग आउटकम–

पाठ का पूर्ण ज्ञान

आकर्षक एवं मनोरंजक शिक्षण

रेमिडियल कक्षाओं के लिए उपयोगी

हेमलता गुप्ता
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय मुकन्दपुर,
विकास खण्ड–लोधा,
जनपद–अलीगढ़।

Innovation

HOW TO KNOW SOCIAL WORKERS AND THEIR WORKS

शिक्षण संवाद

This activity is related to society workers who help us in day to daily life.

Materials Required - Paper, Ball pin, Pen, Marker.

Need of Innovation - I felt when I used to taught students only by the mean of voice, students understand at that time but when I asked from the students after 2-3 days, most of them forgot all the names of the workers and their works.

Application - So I came up with activity that will help the students to learn easily and will be in there mind for longer. In this activity I gave a character to play to some of the students and give them name via Paper slip such as Grocer, Plumber, Baker, Computer Operator, Author, Lawyer etc. on which the name of their character was written. I separated this group of students and made them stand near blackboard. After that I taught the students again by pointing out towards the students who were performing their character and explained their characters, this time students learn easily and remember the work and their names for longer.

Even students enjoyed this new learning process and eager to learn more. On 2nd October 2019 students performed this activity in front of all the Members of Education Committee (SMC) and the villagers that were present at that time.

Result - Students learn and understands the Name of the Workers and their Works Quickly and Easily. Teacher didn't need to repeat the same thing again and again. The SMC Members and the villagers were delighted. The participated students were appreciated and rewarded with gifts by the Head Mistress

Rajkumar Singh
Assistant teacher,
Composite school P.S Ahmadpur
Nayagoan (English Medium),
Block & District-Hapur.
Email-rajonline1112@yahoo.com

विराम चिह्न

आओ हिंदी विषय को जानें,
उसमें विराम चिह्न पहचानें।
तुम सब हो इनसे अंजान
ये देते वाक्यों को जान।

। = देखो ये है पूर्ण विराम।
पूरा वाक्य करता आराम।।

, = बच्चों अल्पविराम है आया,
अनेक शब्दों को साथ में लाया।

! – विस्मयबोधक चिह्न है ये तो।
ओह! बड़ा आश्चर्य है देखो।।

? प्रश्नवाचक ब पूछे ऐसे,
प्रश्न करे ये कब और कैसे?

; अर्द्ध विराम की महिमा पूरी।
पूरी बात दो वाक्यों की,
रहे न इसके रहते अधूरी।।

" उद्धरण चिह्न मुखिया हैं सबके।
वाक्य पकड़ में रहते इनके।।

– योजक चिह्न है लगता जहाँ पर।
बड़े छोटे का भेद ना वहाँ पर।।

_ निर्देशक चिह्न क्या कहे ये जानो।
आगे कुछ विशेष है मानो।।

{( )} कोष्ठक चिह्न' में शब्द जो बैठा।
पहले शब्द पर जमकर ऐंठा।।

० लाघव चिह्न है छोटा सा पर।
भरे रखता शब्दों का सागर।।

^ काकपद त्रुटिपूरक कहलाता।
छूटी बात सब तक पहुँचाता।।

:– विवरण चिह्न कहे जो समझो।
विस्तार में बात बताएँगे तुमको।।

विराम चिह्न भाषा की जान।
इनसे रहो ना अब अंजान।।

डॉ0 रेणु देवी
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय नवादा,
विकास खण्ड व जनपद–हापुड़।

" । ; , ^ {( )}
– ! ? —

English Medium Diary

Students and Co-curricullar Activities

A Chinese proverb states- "Teach me and I will forget, Show me and I will remember, Involve me and I will never forget."

Intellectual development of a student to a great extent is achieved in the classroom but development like Character building, Moral and Spiritual values, Physical Growth, Creativity, Self discipline, Leadership qualities and many more are enhanced by Co-curricular Activities only. It teaches the students to stand up for their rights.

Co-curricular Activities play a vital role in giving the young ones the ability to mould their character into well rounded people, strength their self-confidence, improves academic performance, sense of responsibility, exposure to new activities. It sharpens their communication skills and public speaking.

Co-curricullar Activities are good for improving students learning experiences at school which in turn improves their attendance at school.

The students through Co-curricular Activities learn ethical values of different cultures and religions, discipline, patience etc.

Assembly prayer is also a part of Co-curricular Activities as it teaches students discipline, moral values and meditation. Students learn better through classroom

activities like quizzes, debates and recitation.

According to Mahatma Gandhi- "By education I mean an all round drawing out of the best in child and man- body, mind, soul and spirit."

Keeping all this in mind, I paid a lot attention towards Co-curricular Activities and all round development of my students. Keeping them engaged in activities like meditation, dance, music, art and craft, PT display, G.K. quiz etc. Throughout the year along with academics. I found my students more confident, Disciplined patient and regular at school.

At last, I would like to quote lines by Dr. APJ Abdul Kalam- "Creativity is the key to success in the future and Primary Education is where teachers can bring creativity in children at the level."

Shilpi Upadhyay,
Assistant Teacher,
Primary School Biharigarh,
Block-Mujaffrabad,
District-Saharanpur.

गतिविधि

सही अंदाज लगाओ तो जानें

शिक्षण संवाद

सामग्रीः– 1 मीटर लंबा डंडा, बाल्टी –1

खेल विधि :–

1– सभी बच्चों को लगभग 8 से 10 मीटर व्यास के गोले में बैठते हैं।

2 – सभी बच्चों के सामने बाल्टी को गोले में उल्टा करके रखते हैं।

3 – एक बच्चे को गोले में बाल्टी से लगभग 5 से 7 मीटर दूर खड़ा करते हैं।

4 – बच्चे को डंडा देकर बताते हैं कि जब तुम्हारी आँखें पट्टी से बंद कर दी जाएँ तब तुम्हें बाल्टी के पास जाकर डंडे को बिना जमीन में टच किए डंडे से बाल्टी को पीटना है।

5 – अब बच्चे की आँखें पट्टी से बंद कर उसे थोड़ा गोले में घुमाकर उसी स्थान पर खड़ा करते हैं, इसी बीच सभी बच्चे ताली बजाकर प्रतिभागी बच्चे का उत्साहवर्धन करते हैं।

6 – बच्चा अंदाज से बाल्टी की ओर जाता है यदि वह बाल्टी को डंडे से पीटता है तो उसका अंदाज सही होता है, यदि वह बाल्टी को नहीं पीट पाता तो उसका अंदाज गलत होता है।

खेल का उद्देश्य :–

किसी भी लक्ष्य को अपनी आँखों से एक बार देखकर फिर आँखें बंद कर अपने मन मस्तिष्क द्वारा लक्ष्य को पाने की क्षमता का विकास करना।

कृष्ण गोपाल,
इं0 प्रधानाध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय दलेलनगर,
विकास खण्ड–अजीतमल,
जनपद–औरैया।

प्रेरक प्रसंग

महावीर स्वामी

शिक्षण संवाद

करीब ढाई हज़ार साल पहले वैशाली गणतंत्र के क्षत्रिय कुंडलपुर में पिता सिद्धार्थ और माता त्रिशला के यहाँ तीसरी संतान के रूप में चैत्र शुक्ल तेरस को वर्धमान का जन्म हुआ। यही वर्धमान बाद में स्वामी महावीर बने। महावीर को वीर, सन्मति और अतिवीर भी कहा जाता है। उन्हें लोग संजस, और जसस (यशस्वी) भी कहते थे।

भगवान महावीर ने अहिंसा की जितनी सूक्ष्म व्याख्या की है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने मानव को मानव के प्रति ही प्रेम और मित्रता से रहने का संदेश नहीं दिया अपितु मिट्टी, पानी अग्नि, वायु, वनस्पति से लेकर कीड़े – मकोड़े, पशु – पक्षी आदि के प्रति भी मित्रता और अहिंसा विचार के साथ रहने का संदेश दिया। उनकी शिक्षा में पर्यावरण के साथ बने रहने की भी सीख है।

एक बार महावीर स्वामी पेड़ के नीचे ध्यानमग्न बैठे थे। वह आम का पेड़ था और पेड़ पर आम लटक रहे थे। बच्चे ने आम तोड़ने के लिए पत्थर फेंके। कुछ पत्थर फलों में लगे कुछ पेड़ पर और कुछ महावीर स्वामी को लगे। जो आम गिरे बच्चों ने प्रसन्नता से उठा लिए और स्वामी की ओर देखा और बोले–"प्रभु! हमें क्षमा करें। हमारे कारण आपको कष्ट हुआ है।"
प्रभु बोले–"मुझे कोई कष्ट नहीं हुआ है।"
बच्चों ने फिर पूछा–"तो फिर आपकी आँखों में आँसू क्यों?"

महावीर स्वामी ने कहा इस पेड़ का जन्म ही तुम्हें फल देने के लिए हुआ था पर तुमने धैर्य न रखकर इसे पत्थर मारा और इसे कष्ट हुआ फिर भी इसने तुम्हे मीठे फल दिए। इस पेड़ को पत्थर लगने से जो कष्ट हुआ उतने ही कष्ट को मैंने भी महसूस किया। पर मैं इस पेड़ की तरह तुम्हें कुछ न दे सका। पेड़ के कष्ट और तुम्हें कुछ न दे सका इन दोनों ही कारणों से मैं दुखी हूँ। उसी क्षण बच्चों ने महसूस किया कि हमारी तरह पेड़ पौधों और जीव जंतुओं को भी कष्ट होता है। हर प्राकृतिक वस्तु को उसकी प्रति के अनुसार रहने देना चाहिए।

अर्चना अरोड़ा
प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय बरेठर खुर्द,
विकास खण्ड–खजुहा,
जनपद–फ़तेहपुर।

प्रेरक प्रसंग

चंदन बाला की करुण पुकार, दौड़े आये स्वामी एक बार।

शिक्षण संवाद

जैन धर्म का प्रसिद्ध महोत्सव है, चंदन बाला महोत्सव। इस पर्व पर जैन समुदाय पूजा पाठ के लिए एकत्रित होता है। इस दिन लोग चंदन बाला की झाँकी निकालते हैं।

इस पर्व के बारे में जनश्रुति है कि जब कौशांबी में जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थांकर छह माह और तेरह दिन के प्रवास पर आए थे। वह साधना में लीन रहते थे और उपदेश देते थे। वह जब भिक्षा लेने के लिए जाते, तब यही कहते कि वह राजा की बेटी से ही भिक्षा लेंगे, लेकिन वह जंजीरों से जकड़ी होगी, आँसुओं का सैलाब उसकी आँखों में होगा। नगर के सभी लोग महावीर स्वामी की इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते और सोचते कि ऐसा कहाँ मिलेगा जिसमें राजा की बेटी इस परिस्थिति में होगी और उनकी हँसी उड़ाते। जबकि महावीर स्वामी की यह बात सत्य थी।

अंग देश के राजा की बेटी चंदन बाला जंगल में खो गई थी, उसे लोगों ने एक अमीर सेठ को बेच दिया। अमीर सेठ निसंतान था। उसकी पत्नी ने देखा कि उसका पति एक लड़की को लाया है तो वह चंदन बाला से नफरत करने लगी और उसे बेड़ियों में जकड़कर कोठरी में डालकर उसे यातनाएँ देने लगी।

एक दिन महावीर स्वामी अमीर सेठ के घर के सामने से निकले तो चंदन बाला चुपके से सेठानी की नजर बचाकर जंजीरों में जकड़ी हुई सूप में भिक्षा लेकर महावीर स्वामी के सामने खड़ी हो गई। महावीर स्वामी ने चंदन बाला को पहचान लिया और मुक्त कराया। सेठ की पत्नी ने उनसे माफी माँगी और नगर के लोग भी नतमस्तक हो गए। तभी से चंदन बाला महोत्सव की शुरुआत हुई।

नरेंद्र कुमार,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय लखनापुर,
विकास खण्ड–भाग्यनगर,
जनपद–औरैया।

"ZEETINGS"

"अपने जुनून, अपने काम, अपने सबक और अपने विचारों को प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण मंच है – **ZEETINGS**-"

ज़िटिंग्स एक वेब आधारित प्लेटफार्म है जो प्रतिभागियों को आपकी बैठकों, प्रशिक्षण सत्रों, कार्यशालाओं, पाठों व घटनाओं में सक्रिय रूप से अपने स्वयं के उपकरण से भाग लेने में सक्षम बनाता है। इसे डाउनलोड या इनस्टॉल करने के लिए कुछ भी नहीं है और यह सभी कनेक्ट डिवाइस पर काम करता है। एक बार जब ये कनेक्ट हो जाते हैं तो प्रतिभागी आपकी स्लाइड्स का अनुसरण कर सकते हैं।

इसके उपयोग के लिए आपको एक सत्यापित टीचर या एक योग्य स्कूल या विश्वविद्यालय का छात्र होना चाहिए। इसमें साधारण रूप से आपको अपना नाम, ईमेल और एक पासवर्ड सेट करके **sign in** करना है। यह सभी अन्तरक्रियाशीलता लोगों को वास्तव में विषय से जुड़ने में मदद करती है और आपको प्रतिभागियों को वास्तव में क्या लगता है, इसके बारे में मूल्यवान डेटा एकत्र करने में आपकी मदद करता है।

एक अनोखा अनुभव उपयोग करें एवं शिक्षा की अलख को जगाने और बढ़ाने में सरकार और विश्व का साथ दें।

अंजली मिश्रा
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय असनी प्रथम,
विकास खण्ड–भिटौरा,
जनपद–फ़तेहपुर।

गुरु महिमा

आपके व्यक्तित्व का जो निर्माण है।
उसमें माता पिता व गुरु का भी स्थान है।
वह राष्ट्रीय संस्कृति का निर्माता है,
गुरु राष्ट्रीय संस्कृति का निर्माता है।
ईश्वर तो नहीं पर भाग्य विधाता है।
लाखों जीवन संवारता है,

गुमनामी में रहकर भी ज्ञान दीप जलाता है।
ईश्वर तो नहीं पर भाग्य विधाता है।
आपके व्यक्तित्व का जो निर्माण है।
उसमें माता पिता व गुरु का भी स्थान है।
नींव का पत्थर बनकर बुलन्दियों की इमारत सजाता है,
बेनाम रहकर दूसरों के भाग्य पर इतराता है,
ईश्वर तो नहीं पर भाग्य विधाता है।
यही है गुरु का सच्चा सम्मान।
करें अनुसरण उनका, बढ़ाएँ मान।।

पूजा चतुर्वेदी,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय घुघंराला,
विकास खण्ड व जनपद–हापुड़।

बाल साहित्य

हाथी और भंवरे की दोस्ती

लेखक – टी.आर.राजेश
संपादक – एन.बी.टी. (नेशनल बुक ट्रस्ट)

कहानी– एक बार कुछ भंवरे रस पीने के लिए कमल के फूलों वाले तालाब पर जाते हैं। किंतु उनमें से एक भंवरा बड़ा लालची था। सारे भंवरे रस पीकर चले गए किंतु वह रस पीने में मस्त रहा। रात हो गई लेकिन भंवरा इससे बेखबर हो मदमस्त होकर सो गया। जब उसकी आँख खुली तो उसने स्वयं को कमल के पुष्प में बंद पाया चारों तरफ अंधेरा देखकर दुःखी हो गया। उसने सोचा अब कमल तभी खुलेगा जब सूर्य निकलेगा इतने में उसी तालाब में हाथियों का झुंड नहाने के लिए आता है और उसमें से एक हाथी ने एक कमल का फूल तोड़ा और जमीन पर फेंक देता है। यह वही फूल था जिसमें भंवरा बंद हो गया था। अब वह भंवरा जोर–जोर से रोने लगा सोचकर कि अब यह पुष्प कभी नहीं खुलेगा। सारे हाथी चले गए। तभी उनमें से एक नन्हा हाथी उसके रोने की आवाज सुनकर आया और उसने उस फूल को खोल दिया और भंवरा बाहर निकल आया। अब भंवरा खुश हो जाता है और दोनों में मित्रता हो जाती है।

कहानी का उद्देश्य एवं शिक्षा–यह एक अत्यंत शिक्षाप्रद और रोचक कहानी है। इसमें बच्चे भंवरे से सीख लेंगे कि हमें लालच नहीं करना चाहिए और हाथी से सीख लेंगे कि हमें मुसीबत में दूसरों की मदद करनी चाहिए और किस प्रकार हम मदद करके बहुत अच्छा दोस्त पा सकते हैं और इस पुस्तक में चित्रांकन भी बहुत उम्दा तरीके से किया गया है जो इस पुस्तक को पढ़ने के लिए बच्चों में उत्सुकता और रुचि उत्पन्न करता है।

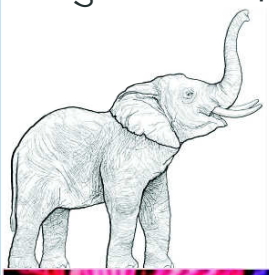

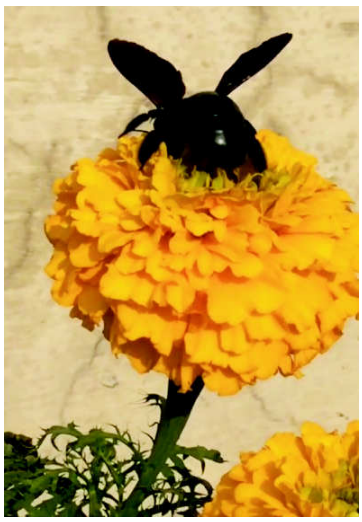

रीनू पाल
सहायक शिक्षिका,
प्राथमिक विद्यालय दिलावलपुर,
विकास खण्ड–देवमई,
जनपद–फतेहपुर।

बाल कहानी

परिवेशीय पेड़ पौधे

शिक्षण संवाद

कक्षा : 3 – विषय : हमारा परिवेश – पाठ : 3 (परिवेशीय पेड़ पौधे)
(कहानी संवाद द्वारा प्रस्तुत)

एक था लड़का। जिसका नाम चीकू था। चीकू पढ़ने में बहुत ही होशियार था। वह अपने आस पास की हर घटना और वस्तु को ध्यान से देखता और उसके बारे में जानने की प्रायः कोशिश करता रहता। बरसात के मौसम में चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी। चीकू मौसम के इस स्वरूप को देख बहुत ही आनंदित था। चीकू के जेहन में एक सवाल पैदा हुआ कि सभी पेड़ पौधे अपने फूल पत्ती और आकार में अलग–अलग क्यों हैं? इनमें अंतर का क्या कारण है?

एक दिन उसने अपने पिता से पूछा, इंवर्टेड जी, पेड़ पौधों की पत्तियाँ, फल, फूल, लंबाई और तने की मोटाई अलग अलग क्यों है?

पिता जी : पेड़ पौधों की लंबाई, मोटाई, फल, फूल और पत्तियों में भिन्नता पाई जाने के पीछे वातारवरण की विभिन्नता है।

चीकू : वातावरण की विभिन्नता?

पिता जी : हाँ, हवा, पानी और धूप, गर्मी वर्षा और ठंड को वातावरण कहते हैं और सभी जगह यह एक समान नहीं होता। इसी असमानता के कारण पेड़, पौधों के आकार में अंतर पाया जाता है। नम, ठंडे और छायादार आवासों के पेड़–पौधों की पत्तियाँ पतली, बड़ी और अधिकतर पंखनुमा होती हैंय जैसे फर्न और ट्रीफर्न।

वहीं वर्षा वाले स्थानों की पत्तियाँ चौड़ी, मोटी और कटी–फटी न होकर पूर्ण किनारे वाली होती हैं जैसे बरगद, पीपल, आम और साल या सागौन।

जहाँ धूप हो और वर्षा के पानी की कमी हो तो पत्तियाँ अतिसूक्ष्म या सिर्फ काँटों के रूप में होती हैं। रेगिस्तानी इलाकों में ऐसी ही वनस्पतियाँ मिलती हैं। यानी जैसा पर्यावरण वैसी पत्तियाँ।

पिता जी चीकू से–"मैं तुमसे कुछ प्रश्न पूछूँ।"

चीकू : जी, पिता जी।

पिता जी : क्या सभी पेड़–पौधों की लंबाई और मोटाई एक समान दिखाई देते हैं?

चीकू : नहीं।

पिता जी : फिर कैसे दिखाई देते हैं?

चीकू : कुछ पेड़–पौधों की तनों की लंबाई और मोटाई में भिन्नता होती है, कुछ की शाखाएँ लंबी होती हैं तो कुछ की घनी और कुछ की कम।

पिता जी : शाबास बेटा। जानते हो जिन तनों में शाखाएँ कम होती हैं और तने पतले और लचीले होते हैं उन्हें हम पौधा कहते हैं।

चीकू : जिनके तने मोटे और लंबे होते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?

पिता जी : पेड़।

चीकू : क्या हम पेड़–पौधों की पहचान केवल तने की लंबाई और मोटाई से ही कर सकते हैं?

पिता जी : नहीं, फल और फूलों के रंग गंध और आकार से भी पहचान सकते हैं।

चीकू घर की छत पर करेले की ओर इशारा करके, ''पिता जी, क्या यह पौधों की श्रेणी में आता है?''

पिता जी : हाँ।

चीकू : लेकिन इसमें तना तो नहीं है।

पिता जी : कुछ पौधों को बढ़ने के लिए सहारा की जरूरत होती है, जिन्हें बेल या लताएँ कहते हैं।

चीकू : पेड़ पौधों से हमें क्या लाभ मिलता है, पिता जी ?

पिता जी : पेड़ पौधे हमारे लिए बहुत ही उपयोगी हैं। पेड़ पौधों से हमें ऑक्सीजन, फल, फूल, सब्जी, अनाज, ईंधन, छाया, ठंडी हवा, वर्षा का जल आदि मिलता है।

चीकू : पेड़ पौधों से हमें क्या लाभ मिलता है, पिता जी?

पिता जी : पेड़–पौधे हमारे लिए बहुत ही उपयोगी हैं। पेड़–पौधों से हमें ऑक्सीजन, फल, फूल, सब्जी, अनाज, ईंधन, छाया, ठंडी हवा, वर्षा का जल आदि मिलता है।

चीकू : पिता जी, यह ऑक्सीजन किस काम आता है?

पिता जी : हमें जिंदा रहने के लिए ऑक्सीजन जरूरी है, जो पेड़ पौधों से मिलता है।

चीकू : पेड़, पौधे ऑक्सीजन कैसे देते हैं ?

प्रिता जी : जब सूर्य के प्रकाश में वायुमंडल से पेड़, पौधे अपने पत्तों और हरे भागों में मौजूद क्लोरोफिल की सहायता से कार्बन डाइऑक्साइड को संश्लेषित करके अपना भोजन को तैयार करते हैं तो उसी दौरान ऑक्सीजन छोड़ते हैं।

चीकू : क्या पेड़, पौधे अपना भोजन खुद बनाते हैं?

पिता जी : हाँ। इसीलिए इन्हें स्वपोषी कहा जाता है।

चीकू : पेड़, पौधे वर्षा कैसे कराते हैं?

पिता जी : जब बादल जलवाष्प के समूहों को लेकर उड़ रहे होते हैं तब पेड़ पौधों का जल भी वाष्प बन कर उनसे मिल जाता है और बादल भारी हो जाते हैं और बरस पड़ते हैं। जिन स्थानों पर पेड़, पौधे अधिक होते हैं वहाँ बारिश ज्यादा होती है।

चीकू : पिता जी, क्या हमें पेड़ पौधों को काटना चाहिए?

पिता जी : नहीं।

चीकू : क्यों?

पिता जी : अगर पेड़ पौधों को काट देंगे तो हमें भोजन कहाँ से मिलेगा और तापमान बढ़ जाएगा जिससे नदियाँ सूख जाएँगी और पानी कम हो जाएगा।

चीकू : तो हमें क्या करना चाहिए?

पिता जी : हम सभी को पेड़ लगाने चाहिए और उनकी देखभाल करनी चाहिए।

चीकू : देखभाल कैसे?

पिता जी : हमें पेड़, पौधों की प्रतिदिन सिंचाई करनी चाहिए और उर्वरक डालते रहना चाहिए।

चीकू : ये उर्वरक क्या होता है?

पिता जी : उर्वरक वे पदार्थ होते हैं जो पेड़ पौधों की वृद्धि और विकास में सहायक होते हैं। ये वैसे ही होते हैं जैसे हमारे लिए भोजन।

चीकू : उर्वरक के बारे में और बताइए।

पिता जी : उर्वरक दो प्रकार के होते हैं। एक रासायनिक उर्वरक और दूसरा जैविक उर्वरक।

चीकू : रासायनिक उर्वरक क्या होता है?

पिता जी : वह उर्वरक जो नाइट्रोजन, फॉस्फेट और पोटाश आदि जैसे रासायनों से मिलकर बनता है।

चीकू : क्या यह लाभदायक होता है?

पिता जी : नहीं। रासायनिक उर्वरक नुकसानदेह होता है।

चीकू : क्या रासायनिक उर्वरक की जगह दूसरा उर्वरक प्रयोग नहीं कर सकते ?

पिता जी : करते हैं न।

चीकू : कौन सा?

पिता जी : जैविक उर्वरक।

चीकू : ये कैसे बनता है?

पिता जी : इसे बनाने के लिए किसी भी जानवर का गोबर ले सकते हैं, घर में मौजूद कूड़ा–कर्कट या फिर फसलों के अवशेष ले सकते हैं। इन सभी को एक गड्ढा खोद कर उसमें सड़ने के लिए डाल देते हैं और जब यह सड़ जाता है तो निकालकर खेत में छिड़क देते हैं। इसे ही जैविक खाद कहते हैं।

पिता जी चीकू से–"पेड़ पौधे हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इसलिए हमें भी उनकी सुरक्षा करनी चाहिए।"

विकास तिवारी,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय अताय,
विकास खण्ड–शहाबगंज,
जनपद–चन्दौली।

बाल पहेलियाँ

1——
हरी–हरी मैं उँगली जैसी,
मेरे अंदर ढेरों मोती,
सिर पर टोपी पहने रहती,
खूब स्वाद से खायी जाती।

2——
बूझो बच्चों एक पहेली,
काली थाल की गोरी सहेली,
घूम–घूम कर नाच दिखाती,
फूल के मैं कुप्पा हो जाती।

3——
सुबह–सुबह हर घर में जाता,
देश–विदेश की सैर कराता,
ज्ञान–विज्ञान का भंडार हूँ मैं,
बताओ बच्चों कौन हूँ मैं?

4——
चार पैरों पर खड़ी हूँ रहती,
हर घर में मैं पड़ी हूँ रहती,
रोगी–निरोगी को आराम कराती,
बोलो बच्चों क्या कहलाती?

5——
प्रथम कटे तो लीन हो जाऊँ,
मध्य कटे चावल बन जाऊँ,
अंत कटे तो भार हो जाऊँ,
किसी देश का नाम कहाऊँ।

6——
शिव की जटाओं से निकली,
भागीरथ की बेटी हूँ,
मैया कहकर मुझे पुकारें,
सबकी प्यास बुझाती हूँ।

पूजा सचान,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय मसेनी
(बालक) अंग्रेजी माध्यम,
विकास खण्ड–बढ़पुर,
जनपद–फर्रुखाबाद।

उत्तर
1–भिंडी 2–रोटी
3–अखबार 4–चारपाई
5–भारत 6– गंगा नदी

स्टूडेंट ऑफ द इयर में सम्मानित हुए बच्चे

गोपीगंज क्षेत्र मे विकास खंड औराई के पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोइलरा मे अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर पूर्व की भांति इस वर्ष भी स्टूडेंट आफ द इयर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इस दौरान कुल छः प्रतियोगिता कराई गईं। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर किया गया। निबन्ध लेखन, क्विज, पेंटिंग, टी एल एम क्राफ्ट, गायन, नृत्य की प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में प्रत्येक कक्षा से एक बालक और बालिका विजेता हुई। इन सभी प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक अंक पाकर कक्षा आठ बी के वीरेंद्र कुमार, राधा, कक्षा–आठ ए की सोनू और अर्चना कक्षा–सात ए से सुजीत एवं अंजलि कक्षा सात बी से विजय कुमार व करीना और कक्षा छरू से संजय कुमार व संगीता कक्षा छ बी में दिलचस्प मुकाबला रहा। नागेश, साहिल और राधिका संयुक्त रुप से विजेता रहे।

विजेता बच्चों को क्राउन पहनाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जटाशंकर बिन्द, सतीश सिंह, आलोक शुक्ला रहे। सफल आयोजन में इंद्रेश कुमार, रंजना त्यागी, देवेश बरनवाल, विजयशंकर तिवारी, प्रिया श्रीवास्तव, सरोजा आदि का योगदान रहा।

ज्योति कुमारी,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोइलरा,
विकास क्षेत्र–औराई,
जनपद–भदोही।

सदविचार

डाक्टर भीमराव अंबेडकर

(जन्म–14 अप्रैल 1891) (मृत्यु–6 दिसंबर 1956)

डॉ0 बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी लोकप्रिय विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे। उन्होंने दलितों, श्रमिकों, किसानों महिलाओं के अधिकारों का समर्थन किया। इसके साथ ही दलित बौद्ध आंदोलन को प्रेरित किया। अछूतों से सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध अभियान चलाया। उनका मानना था कि शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसे प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाना चाहिए। शिक्षा के संबंध में उनके प्रमुख विचार कुछ इस प्रकार से हैं–

माननीय डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के सदविचार (शिक्षा के सम्बंध में)

शिक्षा का उद्देश्य बहुजन हिताय बहुजन सुखाय होना चाहिए ना कि स्व हिताय स्व सुखाय।

शिक्षा जैसा अनमोल रतन उपलब्ध नहीं है।

शिक्षा जनहितकारी होनी चाहिए।

शिक्षा से प्राप्त योग्यता का उपयोग वंचित समाज के कल्याण के लिए किया जाना चाहिए न कि उसके शोषण के लिए।

शील के बिना शिक्षा का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता।

जीवन लंबा होने के बजाय महान होना चाहिए।

शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है।

शिक्षा के मार्ग सभी के लिए खुले होने चाहिए।

शिक्षा शेरनी के दूध के समान है जिसे पीकर हर व्यक्ति दहाड़ने लगता है।

शिक्षा सस्ती से सस्ती हो जिससे निर्धन व्यक्ति भी शिक्षा प्राप्त कर सकें।

अपने बच्चों को विद्यालय जरूर भेजें, उन्हें शिक्षित बनाओ। शिक्षा के बिना समाज को सुधारने का और कोई चारा नहीं।

केवल परीक्षा पास करने तथा पद प्राप्त करने से शिक्षा का क्या उपयोग।

किसी समाज की प्रगति उस समाज के बुद्धिमान कर्मठ और उत्साही युवाओं पर निर्भर करती है।

मैं ऐसे धर्म को मानता हूं जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा सिखाता है।

बुद्धि का विकास मानव के अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।

शिक्षा केवल किताबों से नहीं अपितु व शिक्षक के आचरण व व्यवहार से भी मिलती है।

पेट काटकर पढ़ना पड़े तो पढ़ाई को अधिमान दो।

चरित्रहीन विनयहीन सुशिक्षित व्यक्ति पशु से भी अधिक खतरनाक होता है।

शिक्षा दुधारी शस्त्र है।

शिक्षा से चरित्र अधिक महत्व का है।

सुमन पांडेय
प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय टिकरी मनौटी,
शिक्षा क्षेत्र–खजुहा,
जनपद–फ़तेहपुर।

सदविचार

डाक्टर भीमराव अंबेडकर

शिक्षण संवाद

पहले भी देश और अंत में भी देश....राष्ट्र व्यक्ति से महान है, व्यक्ति चाहें कितना भी बड़ा क्यों न हो, वह राष्ट्र के समक्ष तो छोटा ही है....राष्ट्र की रक्षा के लिए मैं अपना सर्वस्व समर्पित करने को भी तैयार हूँ।" भारतरत्न, महान राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, समाज सुधारक, संविधान शिल्पी, दलितों के मसीहा, ज्ञान के प्रतीक बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर की ये पंक्तियाँ महज पंक्तियाँ नहीं बल्कि देश के प्रति उनके समर्पण का एक छोटा सा परिचय है। 14 अप्रैल 1891 को मध्यप्रदेश के महू में रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई के घर जन्मे विलक्षण प्रतिभा के धनी डॉ भीमराव आंबेडकर न केवल भारतवर्ष बल्कि पूरे विश्व के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनके विचार दुनियाभर में आज भी विमर्श का केन्द्र बने हुए हैं और विश्व का मार्गदर्शन कर रहे हैं। यद्यपि उनका पार्थिव शरीर तो 6 दिसम्बर 1956 को पंचतत्व में विलीन हो गया था किंतु अपने विचारों में वह आज भी न केवल जीवित हैं बल्कि समसामयिक समस्याओं के समाधान की चर्चा में भी शामिल हैं।

डॉ0 भीमराव आंबेडकर ऐसे विद्वानो में से एक थे जिन्होंने जीवनभर वंचित समाज की पीड़ा को आवाज दी, उनके सशक्तिकरण के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए और उनके हृदय सम्राट बन गए। उनका जीवन उनके इस कथन को पूर्णतः चरितार्थ करता है कि "जीवन लंबा होने के बजाय महान होना चाहिए।" उन्होंने नारा दिया था "शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो" इसमें सर्वप्रथम उन्होंने शिक्षा को रखा जिससे पता चलता है कि वह शिक्षा को मानव जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण स्थान देते थे। उनके शब्दों में, "शिक्षा एक आंदोलन है। शिक्षा वह है जो व्यक्ति को निडर बनाए, एकता का पाठ पढ़ाए, लोगों को अधिकारों के प्रति सचेत करे, संघर्ष की सीख दे और आजादी के लिए लड़ना सिखाए।" शिक्षा के माध्यम से वह समाज में न्याय, समानता, भाईचारा, स्वतंत्रता और निर्भयता स्थापित करना चाहते थे। उनके अनुसार यदि शिक्षा उपर्युक्त लक्ष्यों की पूर्ति नहीं करती तो वह निरर्थक है।

उनके अनुसार बुद्धि का विकास मानव अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य है। वह ज्ञान को व्यक्ति के जीवन का आधार मानते हैं। व्यक्ति से उनका आशय सम्पूर्ण मानव जाति से है। इसमें न

केवल पुरुष बल्कि महिलाओं की शिक्षा को भी उन्होंने समान महत्त्व दिया है। अक्सर समाज का एक तबका उन्हें दलितों का मसीहा के रूप में सीमित करने का प्रयास करता है जबकि सच यह है कि देश के प्रत्येक वर्ग के लिए डॉ भीमराव आंबेडकर ने योगदान दिया है। महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री के रूप में उन्होंने हिन्दू कोड बिल पेश किया था जिसके कुछ प्रावधानों पर मतभेद के चलते उन्होंने अपने पद से इस्तीफा तक दे दिया था। महिलाओं के प्रति उनका विचार था कि "मैं किसी समुदाय की प्रगति महिलाओं द्वारा हासिल प्रगति के परिणाम से मापता हूँ।"

वह एक दूरदर्शी चिंतक थे। ड्रॉपआउट छात्रों की जिस समस्या से हम आज भी दो चार हो रहे हैं उस पर उन्होंने आजादी से पूर्व ही चिंतन प्रारम्भ कर दिया था। उनके शब्दों में, "हम इस समय शिक्षा पर जो खर्च कर रहे हैं उसके अधिकांश भाग का वास्तव में अपव्यय हो रहा है। प्रारंभिक शिक्षा का उद्देश्य यह है कि प्राथमिक विद्यालयों में दाखिल होने वाला हर बच्चा स्कूल तभी छोड़े जब वह साक्षर हो जाए और अपने शेष जीवन में वह साक्षर बना रहे।"

शिक्षा के व्यवसायीकरण को लेकर भी बाबा साहब चिंतित थे। इस पर तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के समक्ष अपने विचार रखते हुए वह कहते हैं कि "छानबीन करने पर मुझे पता चला है आर्ट्स कॉलेजों पर जो खर्च किया जाता है उसका 36% भाग फीस से मिलता है। मिडिल स्कूलों पर जो खर्च होता है उसका 21% भाग फीस से आता है। महोदय मेरा निवेदन है कि यह शिक्षा का व्यवसायीकरण है। शिक्षा तो एक ऐसी चीज है जो सबको मिलनी चाहिए। शिक्षा विभाग ऐसा नहीं है जो इस आधार पर चलाया जाए कि जितना वह खर्च करता है उतना विद्यार्थियों से वसूल किया जाए। शिक्षा को सभी संभव उपायों द्वारा व्यापक रूप से सस्ता बनाया जाना चाहिए।

अंत में वह जीवन के प्रत्येक पक्ष को परिवर्तनशील मानते हुए कहते हैं कि "कुछ भी अमर नहीं है, कुछ भी अनिश्चित काल के लिए बाध्य नहीं है। हर चीज की जाँच और परीक्षा जरूरी है। कुछ भी अंतिम नहीं है, हर चीज कार्य–कारण संबंध के अंतर्गत आती है। कुछ भी सनातन नहीं है, हर चीज परिवर्तनीय है।"

उक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि डॉ. आम्बेडकर शिक्षा को मनुष्य के लिए कितना महत्वपूर्ण मानते थे। शिक्षा उनके लिए एक ओर नैतिकता व चरित्र के निर्माण का साधन है वहीं शोषण के विरूद्ध लड़ने का हथियार भी। उनका स्वयं का जीवन इसका प्रामाणिक उदाहरण है।

तिलक सिंह,
प्रधानध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय फुसावली,
विकास खण्ड–गंगीरी,
जनपद–अलीगढ़।

आनंदम कार्यक्रम

आनंदम तो आनंदम है
खुशियों का समागम है
मूल्यों का उदगम है
शिक्षण का अधिगम है
आनंदम तो आनंदम है।

क्या हैं मूल्य बताये कोई
कक्षा शिक्षण तक पहुँचाए कोई
कल संवर जाए इन नौनिहालों का
आज जो अनजान हैं उन सवालों से

सत्य, अहिंसा, क्षमा, त्याग बताना है
सभी मूल्यों से अवगत कराना है
साहस की शिक्षा देकर इनको
आदर्शों का मार्ग बताना

कच्ची मिट्टी के ये नन्हें–नन्हें फरिश्ते
जिस साँचे में ढालें ढल जाएँगे,
जवां होने पर कल, ऐ फरहत'' (खुशी)
राष्ट्र का नव निर्माण कराएँगें।
आनंदम तो आनंदम है, खुशियों का समागम है।

रचयिता
फरहत तबस्सुम,
रा0 प्रा0 वि0 कालिका,
विकास खण्ड–धारचूला,
जनपद–पिथौरागढ़,
उत्तराखण्ड।

योग–विशेष

योग और कम्प्यूटर

शिक्षण संवाद

आधुनिक युग कम्प्यूटर का युग है। आजकल ज़्यादातर कार्य कम्प्यूटर से ही होते हैं या यूँ कहा जाए कि कम्प्यूटर पर व्यक्तियों की निर्भरता बहुत अधिक हो गयी है। इसका कारण भी है। कम्प्यूटर एक ऐसी युक्ति है, जिससे बड़े–बड़े और महत्वपूर्ण कार्य शीघ्रता से सम्पादित कर लिए जाते हैं। इसलिए कम्प्यूटर की जानकारी भी सभी को होना आवश्यक है क्योंकि चाहे दुकान हो या कोई संस्थान इसका प्रयोग विशेष स्थान रखता है। जिस व्यक्ति को कम्प्यूटर की जानकारी नहीं है वह आसानी से सर्वाइव नहीं कर सकता है।

योग और कम्प्यूटर से आशय ऐसे व्यक्तियों के लिए योग का महत्व जो कम्प्यूटर पर लगातार आठ से दस घण्टे काम करते हैं। ऐसे लोग कम्प्यूटर पर लगातार आठ से दस घंटे काम करके कई तरह के रोगों का शिकार हो जाते हैं या फिर तनाव व थकान से ग्रस्त रहते हैं। निश्चित ही कंप्यूटर पर लगातार आँखें गड़ाए रखने के अपने नुकसान तो हैं ही इसके अलावा भी ऐसी कई छोटी–छोटी समस्याएँ भी पैदा होती हैं, जिससे हम जाने–अनजाने लड़ते रहते हैं। तो आओ जानें कि इन सबसे कैसे निजात पाएँ।

इससे होने वाली हानियाँ

स्मृति दोष, दूर दृष्टि कमजोर पड़ना, चिड़चिड़ापन, पीठ दर्द, अनावश्यक थकान आदि। कंप्यूटर पर लगातार काम करते रहने से हमारा मस्तिष्क और हमारी आँखें इस कदर थक जाती हैं कि केवल निद्रा से उसे राहत नहीं मिल सकती। देखने में आया है कि कंप्यूटर पर रोज आठ से दस घंटे काम करने वाले अधिकतर लोगों को दृष्टि दोष हो चला है। वे किसी न किसी नंबर का चश्मा पहनने लगे हैं। इसके अलावा उनमें स्मृति दोष भी पाया गया। काम के बोझ और दबाव की वजह से उनमें चिड़चिड़ापन भी आम बात हो चली है। यह बात अलग है कि वह ऑफिस का गुस्सा घर पर निकालें। कंप्यूटर की वजह से जो भारी शारीरिक और मानसिक हानि पहुँचती है, उसकी चर्चा विशेषज्ञ अकसर करते रहे हैं।

बचाव के उपाय

पहली बात कि आपका कंप्यूटर आपकी आँखों के ठीक सामने रखा हो। ऐसा न हो कि आपको अपनी आँखों की पुतलियों को ऊपर उठाये रखना पड़े, तो जरा सिस्टम जमा लें जो आँखों से कम से कम तीन फिट दूर हो। दूसरी बात कंप्यूटर पर काम करते वक्त अपनी सुविधानुसार हर 5 से 10 मिनट बाद 20 फुट दूर देखें। इससे दूर दृष्टि बनी रहेगी। स्मृति दोष से बचने के लिए अपने दिनभर के काम को रात में उल्टे क्रम में याद करें। जो भी खान–पान है उस पर पुनः विचार करें। थकान मिटाने के लिए ध्यान और योग निद्रा का लाभ लें।

योग एक्सरसाइज

इसे अंग संचालन भी कहते हैं। प्रत्येक अंग संचालन के अलग–अलग नाम हैं, लेकिन हम विस्तार में न जाते हुए बताते हैं कि आँखों की पुतलियों को दाएँ–बाएँ और ऊपर–नीचे नीचे घुमाते हुए फिर गोल–गोल घुमाएँ। इससे आँखों की माँसपेशियाँ मजबूत होंगी। पीठ दर्द से निजात के लिए दाएँ–बाएँ बाजू को कोहनी से मोड़िए और दोनों हाथों की अँगुलियों को कंधे पर रखें। फिर दोनों हाथों की कोहनियों को मिलाते हुए और साँस भरते हुए कोहनियों को सामने से ऊपर की ओर ले जाते हुए घुमाते हुए नीचे की ओर साँस छोड़ते हुए ले जाएँ। ऐसा 5 से 6 बार करें फिर कोहनियों को विपरीत दिशा में घुमाइए। गर्दन को दाएँ–बाएँ, फिर ऊपर–नीचे नीचे करने के बाद गोल–गोल पहले दाएँ से बाएँ फिर बाएँ से दाएँ घुमाएँ। बस इतना ही। इसमें साँस को लेने और छोड़ने का ध्यान ज़रूर रखें।

बबलू सोनी
सहायक शिक्षक,
इंग्लिश मीडियम प्राइमरी स्कूल कसराँव,
विकास खण्ड–हथगाम,
जनपद–फ़तेहपुर।

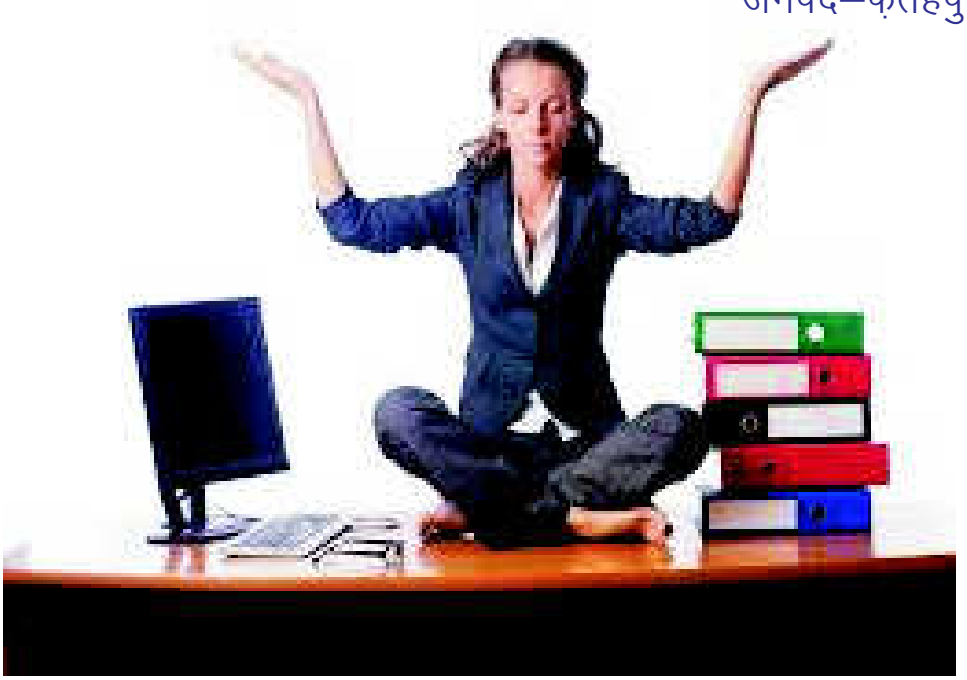

मिशन गीत

रचयिता
शालिनी सिंह,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय जानकीपुर,
विकास खण्ड–सिराथू,
जनपद–कौशाम्बी।

मिशन शिक्षण संवाद
आओ हाथ से हाथ मिलाएँ
मिशन शिक्षण संवाद से जुड़कर,
अपने बेसिक शिक्षा व शिक्षक का मान बढ़ाएँ।।
आओ .....
मिशन शिक्षण संवाद स्वयं शिक्षक का ही प्रतिबिम्ब है,
जो सीखने सिखाने का हौंसला बढाए,
आओ ....।।।
जहाँ न जाति बन्धन का कोई रिश्ता है,
न मतभेद बढ़ाए,
अपने बेसिक शिक्षा व शिक्षक का मान बढ़ाए।।
आओ.....।
मिशन शिक्षण संवाद वो दरवाजा है,
जहाँ शिक्षक अपने शिष्यों का उज्ज्वल भविष्य बनाए।।
आओ .....।।
हर शिक्षक की स्वैच्छिक भूमिका ही शिक्षा उत्थान को,
आगे बढ़ाए।।
आओ.....।।
जो सीखे और सिखाएँ,
ऐसा मार्ग दिखाएँ,
मिशन शिक्षण संवाद अपनों से अपनों को जोड़कर,
इक परिवार बनाएँ।।
आओ.....।।
आओ हाथ से हाथ मिलाएँ,
मिशन शिक्षण संवाद से जुड़कर,
बेसिक शिक्षा व शिक्षक का मान बढ़ाएँ।।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. Twitter@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू—टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : 9458278429
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
मिशन शिक्षण संवाद